षष्ठम अध्याय
सूर्यबाला की रचनाओं में निरुपित समस्याएँ

6.1 सूर्यबाला के उपन्यासों में निरुपित समस्याएँ

6.2 सूर्यबाला के कहानी साहित्य में निरुपित समस्याएँ

6.3 व्यंग्य साहित्य में निरुपित समस्याएँ

6.4 बाल साहित्य में निरुपित समस्याएँ

इस अध्याय के अंतर्गत मैं सूर्यबाला द्वारा रचित उपन्यास, कहानी, व्यंग्य, बाल साहित्य में निरुपित समस्याओं का आकलन करुँगी । उनके उपन्यासों में व्याप्त समस्याएँ जैसे सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याओं का चित्रण करुँगी । साथ ही समाज एवं परिवार कि व्याख्या देकर इन समस्याओं पर चर्चा करुँगी । सूर्यबाला ने अपने उपन्यासों में सामाजिक एवं पारिवारिक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है । इसके पश्चात् आर्थिक समस्या, धार्मिक समस्या, राजनीतिक समस्या, महानगरीय समस्या, मूल्य विघटन की समस्या, नारी शोषण की समस्याओं पर सूक्ष्म रूप से चर्चा करुँगी । उसके उपरांत सूर्यबाला की कहानियों में निरुपित समस्याएँ जैसे नारी जीवन, पारिवारिक जीवन, मूल्य विघनट की समस्या, पात्रों की मनोदशा, पात्रों में संवेदनहीनता, शहरी जीवन, पारिवारिक जीवन आदि समस्याओं पर प्रकाश डालने का मेरा प्रयास रहेगा । तत्पश्चात् सूर्यबाला के व्यंग्य साहित्य एवं बाल साहित्य में निरुपित समस्याओं पर दृष्टि डालने का मेरा उद्देश्य रहेगा ।

6.0 सूर्यबाला के उपन्यासों में निरुपित समस्याएँ :

समाज का अर्थ (व्याख्या) :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । समाज में रहना और सामाजिक जीवन व्यतित करना मनुष्य का स्वभाव है । मनुष्य हमेशा समाज के साथ-साथ चलता रहता है तथा समाज मानव के साथ चलता रहता है । मनुष्य समाज से पृथक नहीं है।

समाजशास्त्र में समाज का एक अर्थ विशेष है । समाजशास्त्र में व्यक्तियों के मध्य पाये जाने वाले सामाजिक संबंधों के व्यवस्थित स्वरूप को 'समाज' कहते हैं । भिन्न-भिन्न विद्वानों द्वारा दी गई समाज की परिभाषा देखें :

समाज की परिभाषा:

गिडिंग्स के अनुसार : "समाज स्वयं संघ है । वह एक संगठित व्यवहारों का योग है , जिसमें सहयोग देने वाले एक-दूसरे से संबंधित होते है ।"[1]

हेनकीन्स के अनुसार : "हम अपने अभिप्राय के लिए समाज की परिभाषा इस प्रकार कर सकते हैं कि वह पुरुषों, स्त्रियों तथा बालकों का कोई स्थाई अथवा अविराम समूह है जो कि अपने सांस्कृतिक स्तर पर स्वतंत्र रूप से प्रजाति की उत्पत्ति एवं उसके पोषण की प्रक्रियाओं का प्रबंध करने में सक्षम होता है ।"

गिन्सबर्ग के शब्दों में : "समाज सुनिशिच्त संबंधों एवं व्यवहार की पद्धतियों से सुसंबद्ध व्यक्तियों का ऐसा समूह है जो दूसरे व्यक्ति से सहज ही अलग पहचाना जा सके ।"[2]

इन परिभाषाओं को देखते हुए यह कह सकते हैं कि समाज संबंधों, रिश्तों का आधार है । मानव का आपसी संबंध जो अन्य लोगों के साथ बाँधने के बाद जो व्यवहार का निर्माण एवं विकास, एक-दूसरे को सहयोग देना आरंभ करते हैं । इसी प्रथा को समाज अपनी एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाते रहते हैं । उसे ही समाज कहते हैं । समाज की ईकाइयों में व्यक्ति, परिवार, समूह, समिति, समुदाय, संस्था आदि ईकाइयाँ कार्यरत होती हैं । भारतीय समाज को देखें तो प्राचीन काल से ही समाज को चार वर्णों में विभाजित किया गया है । और

कालांतर में भारतीय समाज में जातिगत व्यवस्था का आरंभ हुआ और इससे वर्ण व्यवस्था की समस्याएँ आने लगीं । सूर्यबाला ने उपन्यासों में सामाजिक परंपराओं और परिवार को ही अधिक मद्देनज़र रखकर अपनी लेखनी चलाई है ।

परिवार का अर्थ : परिवार शब्द अंग्रेजी के Family शब्द का रुपांतर है जो लैटिन भाषा के famulus शब्द से निकला है । ग्रीक लोग परिवार के लिए Oikonomia शब्द का प्रयोग करते हैं । सामान्य रुप से परिवार में माता-पिता एवं उनके बच्चों को सम्मिलित किया जाता है ।

परिवार की व्याख्या :

आगबर्नतथा निमकॉक : "परिवार पति-पत्नी का बच्चों-सहित अथवा थोड़ा-बहुत स्थाई संघ है अथवा एक स्त्री या पुरुष का अकेले ही बच्चों के साथ वाला संघ है।"[3]

मेकाइवर और पेज : "परिवार उस समूह को कहते हैं जो यौन संबंधों पर आधारित है और जो इतना छोटा व स्थायी है कि उसमें बच्चों की उत्पत्ति एवं पालन-पोषण हो सके ।"[4]

बर्गेस और लॉक : "परिवार व्यक्तियों के उस समूह का नाम है जिसमें वह विवाह, रुधिर या दत्तक संबंध से बँधे होकर भिन्न-भिन्न नहीं अपितु एक गृहस्थी का निर्माण करते हैं । इस गृहस्थी में वे एक-दूसरे पर पति-पत्नी, माता-पिता, पुत्र-पुत्री तथा भा-बहन के रुप में प्रभाव डालते हैं और एक-दूसरे के साथ संबंध स्थापित करते हैं । वे सब एक गृहस्थी में एक सामान्य संस्कृति को जन्म देते हैं और उसको बनाए रखते हैं ।"

वील्स तथा हॉइजर : परिवार को संक्षेप में एक सामाजिक समूह के रुप में परिभाषित किया जा सकता है जिसके सदस्य रक्त के आधार पर एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं ।

परिवार के प्रकार मे एक संयुक्त परिवार एकल परिवार का समावेश होता है ।

उपन्यास समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं । समाज में घटने वाली घटनाओं से लेकर मानव हृदय की हलचल, द्वंद्व, संघर्ष के भावों क उपन्यास के माध्यम से व्यक्त किया जाता है । जिस प्रकार हम मानव का जीवन बाहर से देखते हैं वह पूर्णतः सत्य नहीं है क्योंकि मनुष्य के बाहरी व्यक्तित्व से कहीं अधिक उफान उसके आंतरिक मन में चलता रहता है । उपन्यास एक ऐसी विधा है जो मानव मन पर गहरा प्रभाव डालती है ।

समाज और परिवार के माध्यम से लेखक जिन परिस्थितियों में उपन्यास की रचना या निर्माण करता है वह उस साहित्य के सामाजिक परिवेश को व्यक्त करता है । हम सब लोग समाज से भिन्न नहीं हैं और समाज हमारे बिना संभव नहीं । इस बात को हम कह सकते हैं कि मनुष्य और समाज एक सिक्के के दो पहलू हैं जो कभी जुदा नहीं हो सकते हैं।

सूर्यबाला ने विविध विषयों को मद्देनज़र रखते हुए पाँच उपन्यास लिखे हैं । उन उपन्यासों में समाज में निहित अनेक समस्याएँ देखने को मिलती हैं ।

6.1 सामाजिक भेदभाव की समस्या:

हमारा समाज प्राचीन युग से ही चार वर्णों में विभाजित है । समय के साथ समाज में जाति-व्यवस्था का उद्भव हुआ । थोड़े-थोड़े अंतराल में इन जातियों की भी उपजातियाँ बनने लगीं । समाज के लोग जाति के आधार पर बँट गये । देश में आज़ादी के बाद जाति-प्रथा को प्रधानता दी गई । इसका परिणाम यह हुआ कि जाति-प्रथा का बंधन थोड़ा कम हुआ । (1) उच्च वर्ग (2) मध्यवर्ग (3) निम्न वर्ग । इन वर्गों में संपत्ति के आधार पर भेद दिखाई देता है । जब किसी लड़की का ब्याह मध्यवर्ग से उच्च वर्ग में किया जाता है तब उस लड़की को उस परिवार, वर्ग की तरह अपने रहन-सहन, खान-पान, व्यवहार में परिवर्तन लाना पड़ता है । ऐसी

ही परिस्थिति का निर्माण सूर्यबाला ने उपन्यास 'मेरे संधिपत्र' में किया है । यह एक ऐसा उपन्यास है जहाँ एक निम्न मध्यमवर्गीय लड़की की शादी एक उच्चवर्गीय विधूर के साथ करवा दी जाती है । मुक्त वातावरण में जीवन व्यतित करने वाली, समझदारी भरा जीवन जीने वाली शिवा की शादी जब उच्चवर्गीय परिवार में हो जाती है तब उसे हवेली में सेठानी माँ अर्थात् सास की भाँति अपने मन के विचार, पहनावा, रहने का तरीका, व्यवहार आदि में परिवर्तन करना पड़ता है । जब शिवा इस परिवार में आकर कम कीमतवाले कपड़े, गहने पसंद करती है तब शिवा को उसकी सास के द्वारा टोका जाता है । खानदानी लोगों पर भारी-बहुमूल्य चीजें ही शोभा देती हैं । हल्की-पुलकी चीजें छोटे लोगों के पहनने-ओढ़ने की होती हैं । हम भी वैसे ही पहनें तो हमारे-उनके बीच फर्क ही क्या रह जाये? है न? इसमें खानदान की इज्जत का सवाल रहता है । और इस तरह शिवा को हवेली के रहन-सहन, खानपान के सलीके सीखने पड़ते हैं और उसको अपने पूर्व के सभी तरीकों में बदलाव लाना पड़ता है । उसकी सास उसे शिक्षा प्रदान करती है । जब ऐसी स्थिति का निर्माण वास्तविक जीवन में होता है तब लड़की को ऐसे ही यथार्थ स्वरुप में अपने आप में परिवर्तन लाना पड़ता है । अपने पुराने संस्कारों को भुलाकर उच्चवर्गीय संस्कारों, रीति-रिवाजों का पालन करना पड़ता है ।

'दीक्षांत' उपन्यास की बात करें तो यहाँ पर भी शर्मा सर के कारण हमें सामाजिक भेदभाव दिखाई देता है । शर्मा सर के बेटे को ड्रामे में नौकर बनाया जाता है और नितिन बरुआ राजा बना होता है तो शर्माजी गुस्से से लाल हो जाते हैं और इस बात का सारा क्रोध अपनी पत्नी कुंती पर निकालते हैं । इसलिए वह स्कूल में ड्रामा देखने भी नहीं जाते । जब विमल का दृश्य शर्मा सर के सामने मन में उभरता है तब उन्हें ऐसा लगता है 'चादर फेंक, बुशर्ट-चप्पल डाल सीधे भागते हुए स्कूल के भरे हुए हॉल में दर्शकों के बीच में धकियाते पहुँच जाये । सजे-धजे

स्टेज पर नौकर बने झिलने कपड़ों में रिरियाते, दुबले-साँवले विमलभूषण शर्मा को हाथ पकड़कर स्टेज से नीचे घसीटकर लायें, खूब खलबली मचे, चारों तरफ हाय-तौबा हो... और... बीचोंबीच वे जी खोलकर हसें--- प्रतिशोध...' इस तरह देखें तो शर्मा सर भी गरीब मध्यमवर्गीय परिवार से आते हैं । इसलिए उनके साथ भी कॉलेज में ऐसा व्यवहार किया जाता है जो इस उपन्यास में हम साफ़-साफ़ देख सकते हैं ।

सूर्यबाला द्वारा रचित उपन्यास 'सुबह के इंतजार तक' में मीनू के माता-पिता अपने आपको मुंशीजी और मुंशिआइन बुलाने में गौरवान्वित महसूस करते हैं । मीनू अपनी प्रतिष्ठा का इतना ख्याल रखती है कि वह काम भी अपने अनुकूल ढूँढती हैं मगर उन्हें जो काम मिलता है वह उनकी जाति-वर्ग के अनुकूल नहीं मिलता है । जैसे देखें तो उन्हें आयागिरी का, रसोई बनाने का, घर काम करने का, सड़क पर खड़े-खड़े बिस्कुट बेचने का, वर्कर या क्लीनर का ही काम मिलता है । इसलिए मीनू अपनी माँ को कहती है कि 'शायद यह माँ का अपना मोरचा था, जिस पर वह जी-जान से जुटी, पूरी दिलेरी से जूझ रही थी'[6] और इस वजह से मीनू पर जब बलात्कार होता है तब वह उसके लिए कोई कदम नहीं उठा पाती बल्कि यह सोचती है कि मीनू के साथ जो हुआ उसकी वजह से उसकी इज्जत मिट्टी पलित हो जायेगी और यह सब विचार करके ही वह बीमार हो जाती है । मीनू इसलिए सोचती है कि 'काश, हम अपनी सारी तंगहाली के साथ खुले-आम जी सकते... माँ लोगों के घर खाना बना पाती, पिताजी ठेले पर फेरी लगा पाते, बुलू जूते में पॉलिश कर पाता । शायद हम इससे कहीं बेहतर जिंदगी जी पाते...' मीनू अपनी माँ से कहती है 'माँ को मैं नहीं, माँ की अपनी वर्क-चेतना, उनकी मर्यादा की आँच उन्हें तपा रही है ।'[7]

इस तरह सूर्यबाला के तीन उपन्यासों जैसे 'सुबह के इंतजार तक', 'दीक्षांत', 'मेरे संधिपत्र' समाज में होने वाली जाति-प्रथा, भेदभाव, वर्ग-विग्रह, उच्चवर्गीय-मध्यमवर्गीय परिवारों में रहन-सहन, खान-पान, व्यवहारिक मामलों में

जमीन-आसमान का फर्क देखा जा सकता है । इस समस्या को लेखिका ने अपनी प्रखर लेखनी द्वारा पाठकों के सामने प्रस्तुत किया है ।

6.2 गरीबी की समस्या:

हमारे भारत देश में गरीबी यह एक विकट समस्या है जो अपने पग दिन-ब-दिन पसारती जा रही है । उच्चवर्गीय और अमीर होते जा रहे हैं और गरीबी रेखा का स्तर और बढ़ता जा रहा है । दोनों वर्गों के बीच एक कभी न मिटनेवाली खाई का निर्माण हो चुका है । इसी समस्या को उजागर करते हुए हमारे साहित्य में कई लेखकों ने अपनी बात को रखा है । परंतु सूर्यबाला ने इस समस्या को यथार्थ स्वरुप में अपने उपन्यासों में उजागर किया है जो सही में हमारे अंतरमन को झिंझोड़ देता है । गरीबी एक ऐसी समस्या है जो दूसरी अन्य समस्याओं को भी जन्म देती है जिससे मनुष्य का जीवन बदहाल हो जाता है । सूर्यबाला के उपन्यास 'मेरे संधिपत्र' में शिवा का विवाह एक उच्चवर्गीय विधूर से करवाया जाता है वह इसी गरीबी की समस्या से ही उत्पन्न हुआ है और यह समस्या आज से नहीं प्राचीन समय से हमारी संस्कृति, हमारे समाज में देखने को मिल जाती है। आज का आधुनिक युग भी इस बात में पिछे नहीं है और इसी समस्या के कारण आज भी विधूर, वृद्धों, अधेड़ उम्र के पुरुषों का विवाह गरीब घर की लड़कियों से करवाया जाता है जिसका एक मात्र कारण गरीबी है ।

क्योंकि निम्न और मध्यम वर्गीय अपनी बेटियों के ब्याह के लिए अपने समाज में शादी करवाने के लिए दहेज जैसी कुप्रथा के कारण पैसे नहीं जुटा पाते इसलिए अपनी लड़कियों को अमीर घरों में बिना दहेज के शादी करवाकर अपने आपको नसीबदार समझते हैं । शिवा अपने अधेड़ उम्र के पति के साथ स्वयं को भी अधेड़ मान लेती है । जब वह अपने बाल सफेद हुए देखती है तब वह दुःखी होने के बजाय खुश होती है । वह बुद्धिवान होते हुए भी अपने पति को समाज में नीचा नहीं दिखाती और अपने विचारों को अपने खुद से ही दबा देती है । अपनी

इच्छाओं का गला घोंटकर हवेली की सारी जिम्मेदारियों को निभाने में लग जाती है । अपनी संपूर्ण जीवनयात्रा के साथ वह एक तरह का समझौता कर लेती है । गरीबी निम्न और मध्यमवर्गीय समाज की सभी समस्याओं की जड़ है ऐसा कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं होनी चाहिए । भूखमरी, अशिक्षा, शोषण, चोरी, लूटपाट आदि समस्याएँ इसी गरीबी के कारण उत्पन्न होती हैं । 'सुबह के इंतजार तक' उपन्यास में मीनू का परिवार गरीब होने के कारण ही उसके भाई बुलू की फीस नहीं भर पाते और उसे स्कूल छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया जाता है तथा उसे मजदूरी करने के लिए लगा दिया जाता है ताकि वह दो पैसा कमा सके और अच्छे से गुजारा कर सके । मीनू भी अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाती । गरीबी के कारण उन्हें मामा के घर भेज दिया जाता है । जहाँ उसका शोषण होता हमें दिखाई देता है और उसकी माँ और बिट्टू को दवाई के पैसे न होने के कारण दवा-दारु समय पर नहीं मिल पाते जिसके कारण बिट्टू की मौत हो जाती है । मीनू कड़ी मेहनत करके पैसे कमाती है परंतु बुलू और उसकी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाती । गरीबी के कारण आज भी कई लोग समयसर इलाज ना मिलने के अभाव में अपनी जान गँवा बैठते हैं । सूर्यबाला ने मीनू के पात्र के द्वारा जीवन की समस्याओं को यथार्थ रुप में स्वीकारने को प्रेरणा दी है ।

सूर्यबाला ने अपने उपन्यास 'अग्निपंखी' में भी जयशंकर के माध्यम से गरीबी की समस्या पर प्रकाश डाला है । जयशंकर जब शहर नौकरी करने जाता है तब वहाँ के हालात देखकर उसे ऐसा लगता है इस हालात में वह अकेला नहीं है । 'उस जैसों की पूरी जमा, एक पूरी दुनिया है। बोरी, कागज, प्लास्टिक और चिथड़ों की गुदडियाँ। यहाँ से वहाँ सजे हुए फुटपाथ, भिनकते बच्चे, भरे-पूरे कुटुंब।' भारत के ये हाल हमें अधिकतर झोंपड़पट्टियों में देखने को मिलते हैं ।

गरीबी की वजह से 'दीक्षांत' उपन्यास में मध्यवर्गीय शर्मा सर का जीवन भी कम दुखदायक और कष्टदायक नहीं है । गरीबी की वजह से एक पढ़ा-लिखा आदमी भी लाचार हो जाता है परिस्थितियों के आगे । उसे अपने घर-परिवार का

पालन-पोषण करने में भी परेशानियाँ हो रही हैं । शर्मा जी का अंतर्मन एक कप चाय का भी हिसाब लगाता है । 'एक कप चाय रोज के हिसाब से महीने भर की चीनी, चाय और दूध ही जोड़ा जाये तो दस-पंद्रह रुपये महिने की बचत और दस पंद्रह रुपये का मतलब है महिने भर की बचत करना । विनय के फटे बैग की जगह एक नये बैग का आना । शर्मा जी को इतनी कड़ी मेहनत करके जो शिक्षा प्राप्त की थी उसका उन्हें कोई फायदा नहीं हुआ । उनको कहीं सरकारी नौकरी नहीं प्राप्त हुई । उनका जीवन इस कारण निराशा और घुटन से भर गया है । उन्हें अपने परिवार का पालन-पोषण भी करना है । अगर उन्हें अपने परिवार को चलाना है तो उन्हें नौकरी के लिए गिड़गिड़ाना पड़ता है । जब शर्मा जी को प्रिंसिपल रायजादा द्वारा नौकरी छोड़ने के लिए बताया गया तब तब शर्माजी परिवार के बारे में सोचकर रो पड़ते हैं और कहते हैं "मैं अकेला नहीं सर, मेरी पत्नी, स्कूल जाते बच्चे, गाँव में बूढ़ी माँ... मेरे साथ अशक्त, अबोध मुझ पर पूरी तरह निर्भर, एक निर्धन परिवार है, सर....!!" '

नौकरी छुटने के बाद उनके जीवन में आनेवाली गरीबी की भयानकता, लाचारी को सोचते हुए शर्माजी आत्महत्या करने के लिए प्रेरित हो जाते हैं । वे अपने आप से मनोमन कहते हैं "विद्याभूषण बैठे-बैठे असहाय, अपाहिज से देखते रहोगे यह सब... अपने आप को, अपने पुरुषत्व को धिक्कराते... नहीं नहीं डाल दो एक पूरी अंधेरी यवनिका इस अपाहिज़, टुकड़े-टुकड़े की मोहताज मोहताज जिंदगी पर, कुद पड़ो हरहराती, हलकोरती लहरों में इस कुर्सी से... खत्म सब कुछ... खत्म ।"

शर्मा सर की मृत्यु के बाद उनकी पत्नी के पास इतने भी पैसे नहीं है कि उन्हें कफ़न ओढ़ा सके। तब वह अपने कान के कर्णफूल थमा देती है जिसके पैसों से वह अपने पति के अंतिम संस्कार और अन्य विधियों का खर्चा निकाल सके ।

'सुबह के इंतजार' उपन्यास में में बुलू नाम के पात्र की यही हालत है । गरीबी के कारण उसे अपनी पढ़ाई छोड़कर काम करना पड़ता है । जबकि उसके मन में पढ़ाई करने की बड़ी तीव्र इच्छा है परंतु वह ना चाहते हुए भी मजबूर है पढ़ाई छोड़ने के लिए । क्योंकि उसकी फीस क पैसे तक उसके माँ-बाप जुटा नहीं पाते हैं इसलिए उसे मजदूरी करनी पड़ती है अपना बचपन गँवाकर ।

इस तरह सूर्यबाला ने अपने उपन्यासों में अलग-अलग प्रसंगों, घटनाओं, पात्रों के माध्यम से उपन्यासों में गरीबी जैसी अति संवेदनशील समस्या को यथार्थ के धरातल पर फ्रस्तुत करते हुए समाज को एक आईना दिखाने का प्रयत्न किया है ।

6.3 बेरोजगारी :

हमारे देश में बेरोजगारी की समस्या समय के साथ विकट बनती जा रही है। देश में आज़ादी के बाद से आज तक बेरोजगारी की समस्या अपने सबसे भयानक मोड़ पर आकर खड़ी है जिससे देश की युवाशक्ति क्षीण होती जा रही है। उच्च शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात भी आज रोजगारी प्राप्त करने में युवा असमर्थ है ।

इसी समस्या का सूर्यबाला ने अपने उपन्यासों के माध्यम से पाठकों के सामने यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । 'सुबह के इंतजार' उपन्यास में सूर्यबाला लिखती हैं- "बुलू! आजकल पढ़ाई-लिखाई में कुछ रखा नहीं, बेटे..! आजकल तो बी.ए., एम.ए. वाले भी बेकार ही घूम रहे हैं ना।"[5] वहीं अगर देखा जाए तो 'दीक्षांत' उपन्यास में शर्मा सर उच्च शिक्षा प्राप्त किये हुए हैं। पीएच.डी. की हुई है परंतु उनको उनके हिसाब से, उनकी शिक्षा या डिग्री के हिसाब से नौकरी नहीं मिलती । वे जूनियर कॉलेज में पढ़ा रहे हैं । आजकल बेरोजगारी इतनी हद तक बढ़ गई है कि एक पद के लिए लाखों लोग आवेदन

करते हैं और वो भी उच्च शिक्षित होते हुए भी क्लर्क की नौकरी प्राप्त करने के लिए भी होड़ लगी रहती है।

हमारे देश में आज़ादी के बाद शिक्षा के स्तर में सुधार हुआ है परंतु शिक्षा समाप्त करने के बाद देश के युवाओं को बेरोजगारी जैसी महामारी से गुजरना पड़ता है जिसके कारण देश के युवा हताश और निराश हो जाते हैं । दीक्षांत उपन्यास में जूनियर कॉलेज में पढ़ाते जरुर हैं पर वो भी अस्थायी रुप से ही वहाँ पर कार्यरत हैं और इसकी वजह से ही शर्मा सर से इस्तीफा माँगा जाता है और जिसके कारण शर्मा सर का और उनके परिवार का जीवन निर्वाह करना भी मुश्किल हो जाता है। अपनी बेरोजगारी के कारण शर्मा सर इतने निराश और हताश हो जाते हैं कि अपने हाथों से अपनी मौत को गले लगा लेते हैं । आज हमारे देश में कई युवा शर्मा सर जैसी मानसिक परिस्थिति से गुजर रहे हैं । उच्च शिक्षित होने के बावजूद भी योग्य पात्रता होने पर भी उन्हें वो पद, सम्मान नहीं मिलता जिसके वो हकदार होते हैं और मानसिक अवसाद में डुबकर कुछ बेरोजगार युवा आत्महत्या करने के लिए भी प्रेरित हो जाते हैं । सूर्यबाला जैसी लेखिका को ऐसी मानसिकता की पहचान है । इस वजह से उन्होंने इस समस्या पर अपनी यथार्थ दृष्टि डालकर सबका ध्यान इस ओर मोड़ा है । भारत देश की इसी समस्या को अपने उपन्यासों के माध्यम से रोशनी डालने का प्रयास किया है। उनके उपन्यास 'सुबह के इंतजार' की नायिका मीनू इसी बात का पूरजोर से विरोध करती नज़र आती है । वह अपना जीवन निर्वाह करने के लिए झाड़ू लगाने से लेकर ट्यूशन पढ़ाने तक का काम करती है । वह अपने जीवन के मुश्किल पलों को भुलाकर कड़ी मेहनत करने में विश्वास रखती है ।

सूर्यबाला ने आज की वर्तमान परिस्थिति को बहुत पहले ही भाँप लिया था। इसलिए अपने उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने बेरोजगारी की समस्या को इतने सहज और प्रखर ढंग से प्रस्तुत किया है कि हम सोचने-समझने के लिए मजबूर हो जाते हैं । बेरोजगारी देश की सबसे बड़ी विकट समस्या के अंतर्गत आती है

जिससे देश की युवा-शक्ति कुंठित होती है और बेरोजगारी के कारण युवा पीढ़ी अन्य दूसरी विसंगतियों में आ जाती है जैसे चोरी, डकैती, लूटपाट, गुंडागर्दी, वसूली आदि के पीछे का मुख्य कारण देखा जाए तो एक बेरोजगारी ही ही है । अगर इस समस्या का हल नहीं ढूंढा गया तो कल परिस्थिति और भी विकट हो सकती है । देश की युवा पीढ़ी का भविष्य अंधकारमय हो जायेगा बेरोजगारी के कारण ।

6.4 शिक्षा की समस्या :

आज की शिक्षा व्यवस्था में राजनेताओं का, राजनीति का बड़ा महत्त्वपूर्ण रोल है । आजकल शिक्षा केवल पैसा कमाने का सबसे फायदेमंद जरिया बन गया है । शिक्षा का व्यापारीकरण हो रहा है धीरे-धीरे । आज के शिक्षा संस्थानों में केवल ज्ञान देना-लेना महत्त्वपूर्ण नहीं है बल्क वहाँ आपकी प्रतिष्ठा, पैसा, मार्क्स को भी अधिक महत्व प्रदान किया जाता है । डिग्री प्राप्त करना केवल एक व्यापार बन गया है । बिना पात्रता वाला व्यक्ति भी उच्च डिग्री प्राप्त कर लेता है अपने पैसे और रुतबे के बलबूते पर । डिग्री प्राप्त करना पैसों का खेल मात्र हो गया है । शिक्षा-संस्थानों में काबिल लोगों को पीछे ढकेल दिया जाता है और बिना योग्यता वालों को चूपचाप आगे सरका दिया जाता है । मैनेजमेंट भी इस बात की कोई जिम्मेदारी नहीं लेता है । केवल पैसा बनाना ही आज के शिक्षा संस्थानों का एकमात्र उद्देश्य रह गया है ।

जिस चरित्र का निर्माण विद्यार्थियों में करना चाहिए वो ना करके केवल व्यवसाय से जोड़कर ही विद्यार्थियों को देखा जाता है । आज हम देखें तो कई शिक्षा संस्थान के शिक्षकगण अलग से पैसा बनाने के लिए अपने-अपने ट्यूशन क्लास खोलकर बैठ गये हैं । ट्यूशन क्लास क्या कहिये, एक तरह की दुकान ही लगाकर बैठ गये हैं । लेखिका ने अपने उपन्यास 'दीक्षांत' में इस समस्या का बड़ा मार्मिक स्वरुप में वर्णन किया है । देखा जाए तो शर्मा सर के लड़के विनय को

गणित और अंग्रेजी में कम गुण मिलते हैं क्योंकि उसने अपने शिक्षकों से शाम के समय ट्यूशन लेने से इन्कार कर दिया था । शर्मा सर के कॉलेज के अध्यापक बड़े निर्लज्ज भाव से ये कहते हैं- "अरे अपने फादर से कहो, ट्यूशन दिलाये बिना तुम्हारी गाड़ी इस जंक्शन से खिसकने वाली नहीं..." इस तरह से देखा जाय तो शिक्षा का पूरी तरह से बाजारीकरण हो गया है ।

जिन लोगों के पास पैसा है वो लोग आसानी से सरकारी नौकरी प्राप्त कर लेते हैं, चाहे उनकी काबिलियत हो या ना हो । केवल पैसों का खेल खेलकर अपनी मनचाही नौकरी प्राप्त करना आज के वर्तमानकाल का एक ट्रेन्ड बन गया है । 'दीक्षांत' उपन्यास में मिसेज सब्बरवाल, ऐसी ही नीति का एक उदाहरण हैं । चन्द्रभान जैसे चरित्रहीन व्यक्ति को भी कॉलेज में सम्मानजनक दृष्टि से देखा जाता है । पैसों के बल पर एम.एल.ए. के भतीजे की भी नौकरी का इंतजाम हो जाता है । परंतु ईमानदार, मेहनती, उच्च शिक्षा प्राप्त शर्माजी को अपने आत्म-सम्मान के लिए तक लड़ना पड़ता है । बड़े-बड़े शिक्षा संस्थानों मे बड़े-बड़े राजनेताओं की चमचागीरी करके उन्हें पैसा, चंदा देकर आसानी से नौकरी प्राप्त कर ली जाती है और पद के काबिल व्यक्ति को कितनी भी कोशिशों के बाद भी निराशा ही हाथ लगती है । शिक्षा के क्षेत्र में अनुशासनहीनता ने अपने पग पसार दिये हैं, मैनेजमेन्ट की नीतियाँ, सरकारी नियम प्रशासन की नीति की वजह से शिक्षा का क्षेत्र राजनीति के क्षेत्र सा हो गया है । रइसी का पर्दाफास लेखिका ने अपने 'दीक्षांत' उपन्यास के माध्यम से किया है । विद्यार्थियों के द्वारा भी शर्मा सर को अपमानित किया जाता है क्योंकि वे एक अस्थायी शिक्षक हैं । एक अस्थायी शिक्षक की लाचारी को सूर्यबाला ने शर्मा सर के माध्यम से उजागर किया है । राजदान सर विद्यार्थियों की इस हरकत को देखते हुए भी चुप रहते हैं । क्योंकि उनके माता-पिताने कॉलेज को अनुदान दिया है । उल्टा शर्मा सर पर ही आरोप लगाया जाता है और अनुशासनहीनता का विरोध करने के कारण उन्हें अपनी नौकरी से हाथ धोने पड़ जाते हैं । आज की वर्तमान स्थिति भी यही है । जो विरोध

करता है उसे ही भुगतान करना पड़ता है । विद्यार्थियों को अनुशासन सीखाने वाले शिक्षक को ही इसका खामियाजा भुगतना पड़ता है ।

आज के शिक्षा संस्थानों में शर्मा सर जैसे शिक्षकों, प्राध्यापकों की हालत बड़ी दयनीय है । वे अपनी यह लाचारी चुपचाप सह लेते हैं। इस समस्या का सामना अपने कार्यकाल में करते हैं पर उसके खिलाफ़ आवाज़ नहीं उठा सकते हैं । इसी समस्या का सूर्यबाला ने एक मार्मिक चित्रण किया है । प्रिंसिपल राजदान सिंह का कथन है "देखिए, हिंदी प्राध्यापकों की स्थिति काफी नाजुक है... स्कोप ही नहीं... सोच लिजिए ।..विद्यार्थी शिक्षा के माध्यम से रोजी-रोटी की समस्या को हल करना चाहते हैं न... और उन्हें दोष भी नहीं दिया जा सकता तो भाषा और साहित्य तो फुरसत की खुराकी है न..."[8]

वर्तमान काल में भाषा और साहित्य के क्षेत्र को बड़ी दयनीय दृष्टि से देखा जाता है । भाषा आपके विचारों को गति देती है । साहित्य आपको विचार प्रदान करता है । पर आज के आधुनिक युग में शिक्षा की समस्या ने एक विकराल रुप धारण कर लिया है । देश की उच्च संस्थाओं से लेकर ट्यूशन क्लासों तक यही हाल हो गया है । शिक्षा को केवल व्यापारीकरण की दृष्टि से ही देखा जा रहा है । इस पर विद्यार्थियों के चरित्र, ज्ञान व देश के भावि नागरिकों के निर्माण की जिम्मेदारी होती है । परंतु यही संस्थाएँ आजकल सच्ची नीतियों को ना अपनाकर आज की युवा पीढ़ी को गलत राह पर चलने के लिए मजबूर कर रही हैं ।

सूर्यबाला ने अपने उपन्यासों में शिक्षा की समस्या के माध्यम से उच्च शिक्षित युवाओं की समस्या, राजनेताओं की दखलगीरी, शिक्षा के व्यापारीकरण आदि का विरोध किया है ।

6.5 भ्रष्टाचार की समस्या :

भ्रष्टाचार एक वैश्विक समस्या है जो हर समाज को एक दीमक की भाँति खा रहा है और देश की अर्थव्यवस्था, उन्नति में एक बाधारुप समस्या है । भ्रष्टाचार

छोटे स्तर से लेकर बड़े क्षेत्र तक फैला हुआ है । इसके जड़ें इतनी मजबूत हो चुकी हैं कि इसको जड़ से उखाड़ना मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन हो चुका है, जो देश को अंदर से खोखला कर रही हैं । इसका असर छोटे चपरासी से लेकर बड़े स्तर के अधिकारी तक फैला है । आपको अगर छोटा-सा प्रमाणपत्र भी सरकारी खाते से निकलवाना हो तो थोड़े से अधिक रुपये देकर अपना काम आसानी से करवा सकते हैं । सूर्यबाला ने अपने उपन्यास 'अग्निपंखी' के माध्यम से भ्रष्टाचार की समस्या को बताया है कि कैसे भ्रष्टाचार के कारण कथा का मूल पात्र जयशंकर जो इतना पढ़ा-लिखा होने के बावजूद भी जब वह शहर में नौकरी की तलाश करता है तब उसे नौकरी प्राप्त करने के लिए पैसों की माँग रखी जाती है। लेकिन वह रिश्वत देने में असमर्थ होता है तो उसे नौकरी नहीं मिलती । दूसरा भ्रष्टाचार का पहलू सूर्यबाला ने अपने उपन्यास 'दीक्षांत' में शर्मा सर के माध्यम से बताया है । शर्मा सर पीएच.डी. हैं परंतु गरीब होने के कारण वे सरकारी नौकरी प्राप्त नहीं कर पाते क्योंकि शर्मा सर के पास अफसरों को देने के लिए पैसे नहीं थे और इसलिए उनमें काबिलियत होने पर भी जुनियर कॉलेज में अध्यापक की नौकरी करनी पड़ती है जिसके कारण शर्मा सर का कॉलेज में मानसिक और शारीरिक शोषण किया जाता है । जिसका परिणाम यह होता है कि अंत में शर्माजी इन बातों से तंग आकर जिंदगी से हार मान लेते हैं क्योंकि उनको नौकरी से निकाल दिया जाता है जिससे उनकी मानसिक स्थिति खराब हो जाती है और वे आत्महत्या कर लेते हैं । शर्मा सर को हम कह सकते हैं के वो समाज में फैली समस्याएँ जैसे गरीबी, शोषण, भ्रष्टाचार जैसि समस्याओं के कारण बलि चढ़ गये ।

सूर्यबाला ने उपन्यास में भ्रष्टाचार की समस्या को भी बिना किसी डर के बेबाकी से चित्रित किया है और इसे समाज क लिए एक दीमक के रूप में दर्शाया है जो देश की उन्नति में एक बाधारुप है जिसका निराकरण लाना आवश्यक है नहीं तो शर्मा सर जैसे और ना जाने कितने लोग इस समस्या का शिकार बन जाएँगे ।

6.6 बलात्कार की समस्या :

बलात्कार की समस्या हमारे देश में स्त्रियों के प्रति घृणा की भावना से किया जाने वाला दुषित कृत्य है जो एक सामान्य महिला, लड़की के जीवन को तहस-नहस कर देता है । बलात्कार की समस्या इतनी बढ़ गई है कि इसके गुनाहगारों को सख्त से सख्त सजा का प्रावधान सरकार द्वारा किया जाना चाहिए क्योंकि किसी महिला के जीवनक उजाड़कर उसके जीवन को नर्क समान बना देने वालों को आजीवन कारावास या फाँसी की सजा ही मुकरर करनी चाहिए। हमारे देश में आज के संदर्भ में हम आये दिन समाचार पत्रों, न्यूज़ बुलेटिन में अक्सर बलात्कार की घटनाओं के बारे में सुनते आ रहे हैं जिसके कारण देश में महिलाओं की सुरक्षा का बड़ा प्रश्न उद्भव हुआ है ।

सूर्यबाला ने अपने उपन्यास 'सुबह के इंतजार में' इसी समस्या को लेकर मुख्य पात्र मीनू के जीवन पर प्रकाश डाला है । मीनू को बलात्कार होने के कारण अपने माता-पिता को छोड़कर भागना पड़ता है । जब वह काम पर जाती है तो उसे अप्रिय स्थितियों का सामना करना पड़ता है । जब धर्मशाला के दादा मीनू की सच्चाई जानते हैं तब मीनू को वहाँ से चले जाने के लिए कह देते हैं । उसे स्कूल में नौकरी करते समय अध्यापकों की अभद्र भाषा का शिकार होना पड़ता है । मीनू के माता-पिता भी उसे अपनी इज्जत के डर से दुबारा नहीं अपना पाते । जब उसके माता-पिता स्वयं उसे ठुकराते हैं तो लोगों से क्या ही उम्मीद की जाए। भारत जैसे देश में महिलाओं की यही दशा और जीवन बन जाता है । बलात्कार की घटना के बाद उसे कभई भी वह पहले वाला मान-सम्मान या इज्जत समाज नहीं देता । यही हमारे भारतीय समाज की मानसिकता बन गई है । इस मानसिकता में परिवर्तन लाना होगा जो दोषित और जिम्मेदार हैं उन्हें सजा दिलवाने के लिए और बलात्कार पीड़ित महिला को सामाजिक सुरक्षा, मानसिक सुरक्षा, शारीरिक सुरक्षा के लिए मदद करनी होगी । नहीं तो हमारे समाज में इसका शिकार होने वाली महिलाओं की जिंदगी नर्क जैसी बनकर रह जाती है

और फिर ऐसी महिलाएँ अपने आत्म-सम्मान की लड़ाई लड़ते-लड़ते आखिर में हारकर आत्महत्या तक कर लेती हैं । यह सब न हो इसलिए समाज के लोगों को इसके खिलाफ़ साथ में आवाज़ उठाने की आवश्यकता है ।

सूर्यबाला ने समाज की इस विकृत समस्या को अपने उपन्यास 'सुबह के इंतजार में' उजागर करके इस दुषित समस्या के खिलाफ आवाज़ उठाई है ।

6.7 तलाक की समस्या :

आज हमारे देश के लोग पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर इस समस्या को अधिक बल दे रहे हैं । जब परिवार में पति-पत्नी के बीच मनमुटाव बढ़ जाता है तब बिना सोचे-समझे आज के वर्तमान काल में तलाक के लिए निर्णय ले लिया जाता है और इसका खामियाजा फिर उनके बच्चों को भुगतना पड़ता है । जबकि होना यह चाहिए कि आपसी मनमुटाव को आपस मे बैठकर सुलझाना चाहिए । अपने बच्चों की भावनाओं और भविष्य को ध्यान में रखना चाहिए । अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखना चाहिए जिससे यह परिस्थिति उत्पन्न न हो । सूर्यबाला का उपन्यास 'मेरे संधिपत्र' में रत्नेश और उसकी पत्नी के बीच तलाक होता है । रत्नेश का अपनी मॉर्डन पत्नी के प्रति एकतरफा प्रेम होने के कारण रत्नेश को लगता है वह तलाक न देकर उस पर अन्याय कर रहा है ।

हमारे देश में तलाक जैसी समस्या भी बड़े पैमाने पर बढ़ती जा रही है जिसके कारण एक संपूर्ण परिवार तहस-नहस हो जाता है । बच्चों के जीवन के साथ खिलवाड़ किया जाता है । ऐसे माँ-बाप के बच्चे माँ-बाप के प्यार-दुलार से वंचित हो जाते हैं जिससे उनकी मानसिकता पर गहरा प्रभाव पड़ता है । ऐसे बच्चे मानसिक रुप से मजबूत नहीं बन पाते हैं । इसी समस्या को सूर्यबाला ने उजागर किया है ।

6.8 दहेज प्रथा की समस्या:

सूर्यबाला ने अपने उपन्यासों में दहेज प्रथा की समस्या को भी अपने स्त्री पात्रों के जरिये जीवंत चित्रण किया है । आज हम कितने भी आधुनिक क्यों न हो गये हों परंतु आज भी दहेज की प्रथा हमारे समाज में व्याप्त है । बस इसका नाम बदल दिया गया है । इसे गिफ्ट का नाम दिया जाता है । छोटे घर की बेटी हो या बड़े अमीर घर की बेटी हो, अगर उसका विवाह आपको करवाना है तो आपको दहेज का बंदोबस्त करना ही होगा क्योंकि दहेज के बिना शादी में बहुत समस्याएँ आती हैं ।

सूर्यबाला ने अपने उपन्यास 'मेरे संधिपत्र' में शिवा के माध्यम से इस प्रथा का स्वरुप हमारे सामने उजागर किया है । शिवा एक आज़ाद और मुक्त ख्यालों की लड़की होती है परंतु उसके माँ-बाप उसकी दहेज की रकम जमा नहीं कर पाते जिसके कारण शिवा का ब्याह एक अधेड़ उम्र के आदमी के साथ कर दिया जाता है । उसके बाद पूरा जीवन उसे इस समस्या के कारण अपने जीवन के साथ समझौता करना पड़ता है । दहेज की प्रथा हमारे देश में आज से नहीं, आधिकाल से चली आ रही है । दहेज ना देने पर लड़कियों को अपने ससुराल में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है । दहेज के लिए उन्हें शारीरिक व मानसिक रुप से प्रताड़ित किया जाता है । कभी-कभी तो दहेज ना देने के कारण कुछ महिलाओं को जिंदा जलाकर मार दिया जाता है । दहेज हमारे समाज का एक ऐसा काला चेहरा है जो हमारे घर की लड़कियों के जीवन को तहस-नहस कर देता है ।

सूर्यबाला ने 'सुबह के इंतजार' उपन्यास में भी दहेज प्रथा का जिक्र किया है । मीनू को जब उसके दूर के मामा-मामी लेने आते हैं तब मीन के माँ-बाप और उनके बीच दहेज को लेकर ही चर्चा होती है कि मीनू के माँ-बाप दहेज देने में असमर्थ हैं जिसके कारण मीनू की शादी करवाने का जिम्मा मामा-मामी ले लेते हैं और अपने साथ ले जाते हैं जहाँ मीनू के साथ बलात्कार की घटना घटती है ।

सूर्यबाला ने अपने उपन्यासों में दहेज प्रथा का खुलेआम विरोध दर्शाया है । दहेज प्रथा को खत्म करने के लिए सरकार को नये कदम उठाने होंगे जिससे महिलाओं पर दहेज के कारण होनेवाले शोषण को रोका जा सके ।

6.9 झोपड़पट्टी की समस्या :

आज के युग में महानगरों में जीवन जीने के लिए आवास की समस्या सबसे बड़ी समस्या है जिसके कारण महानगरों में ऐसे लोगों को निवास के लिए झोंपड़पट्टियाँ होती हैं जहाँ मजदूर, गरीब लोगों का निवास होता है, जहाँ सभी धर्म, जाति के हर वर्ग के लोग बसे हुए मिल जायेंगे ।

सूर्यबाला ने अपने उपन्यास 'अग्निपंखी' में झोंपड़पट्टी की समस्या का जीवंत चित्रण किया है । जयशंकर गाँव से नौकरी की तलाश में मुंबई जैसे महानगर में आता है । मगर उसे नौकरी मिलने के बाद रहने के लिए जगह झोंपड़पट्टी में ही मिलती है । शादी के बाद वह अपनी बहू को वहाँ रहने के लिए ले जाता है और बार-बार अपनी माँ को टालता है साथ में ले जाने के लिए परंतु माँ है कि हर बार जिद करती है कि उसे जयशंकर मुंबई ले जाए । छः बाई छः फूट की झोंपड़ी में जवान बहु-बेटे के साथ माँ को रहना पड़ता है । जयशंकर विवश होकर एक गहरे नीले रंग का साड़ी का पर्दा टाँग देता है और दूसरी तरफ माँ के लिए खटिया डाल देता है । इस तरह लेखिका बताती है कि इस छोटी-सी झोंपड़ी जैसे घर में कैसे इन तीनों लोगों की दुनिया समा जाती है । शहरी जीवन में इस समस्या का कोई समाधान नहीं है । बड़े-बड़े शहरों मं रहने के लिए घर की समस्या हमेशा बनी रहती है । झोंपड़पट्टी में एकादा छोटा-सा कमरा मिल जाए तो भी वहाँ सबसे बड़ी समस्या बाथरुम की रहती है । लेकिन सबसे जानलेवा होता है दिशामैदान की हाजत दबाए बैठे रहना । अड़ोस-पड़ोस के सभी लोग एक ही बाथरुम के सामने लाइन लगाकर खड़े होते हैं और जल्दी-जल्दी निपटाकर बाहर आते हैं ।

महानगरीय जीवनशैली में यही समस्या सबसे बड़ी समस्या बनकर सामने आती है। सूर्यबाला ने अपने उपन्यास में झोंपड़पट्टी जैसी रहने की समस्या को अपनी भाषा में घटना और प्रसंगों के साथ वर्णन किया है । यह समस्या आज के आधुनिक जीवन की बड़ी समस्याओं में से एक समस्या है जो केवल महानगरों में पाई जाती है ।

6.10 पारिवारिक समस्याएँ :

भारतीय परिवारों में सभी रिश्तों का अलग-अलग महत्त्व होता है । इन रिश्तों में माँ-बाप, भाई-बहन, पति-पत्नी, माँ-बेटा, बाप-बेटा, सास-बहु आदि कई रिश्ते होते हैं । इन रिश्तों में कई बार अनेक समस्याएँ निर्माण हो जाती हैं । इन्हीं समस्याओं को सूर्यबाला ने अपने उपन्यासों में उजागर किया है । पुरुष-प्रधान समाज में स्त्री की स्थिति कितनी विकट होती है यह सूर्यबाला ने दर्शाया है । सूर्यबाला के उपन्यास 'मेरे संधिपत्र' में शिवा का विवाह जब एक अधेड़ उम्र के व्यक्ति के साथ कर दिया जाता है तब उसे छः साल तक कोई संतान नहीं होती जिसके लिए उसका पति अपनी पत्नी को जिम्मेदार ठहरा देता है जबकि असली कारण तो एक पुरुष ही होता है । इस बात को लेकर शिवा को उसका पति कहता है 'छः साल तो हो गये, सूखी की सूखी पड़ी हो ।' शिवा के पति का स्वभाव अहंकार से भरा हुआ है । हर बार वह शिवा को नीचा दिखाता है । जबकि शिवा अपने सारे पारिवारिक दायित्वों को पूरा करती है । इसलिए शिवा जब अपने और अपने पति के संबंध के बारे में सोचती है तो उसे वह सुख नहीं मिल रहा जिस सुख की उसने कामना की थी ।

सूर्यबाला के दूसरे उपन्यास 'अग्निपंखी' में भी पारिवारिक समस्या का चित्रण किया गया है । जब तक जयशंकर के पिता जीवित थे तब तक तो सारे परिवार वाले एक-दूसरे के सात अच्छे से प्यार से व्यवहार करते थे, सब मिल-जुलकर अपनी जिम्मेदारियाँ भी निभाते थे । परंतु जैसे ही जयशंकर के पिता की

मृत्यु हो जाती है और जब वह शहर नौकरी करता है और वहाँ की उसकी स्थिति को उजागर नहीं करता तब सब यही मानते हैं कि वह बड़ा अफसर बन गया है । अब उसके पास बहुत पैसा आ गया है परंतु वह अपने चाचा-चाची को पूछता तक नहीं है । तब संबंधों में दूरियाँ आ जाती हैं और इस वजह से जयशंकर की माँ से भी घर की औरतें जलती-कुढ़ती रहती हैं और संबंधों में खटाश आ जाती है। 'अग्निपंखी' उपन्यास में जयशंकर के माँ-बाप के प्रति परिवार वाले अपनत्व की भावना रखते हैं इसलिए उसके पिता की मृत्यु के बाद जयशंकर की पढ़ाई-लिखाई का सारा खर्चा उसके चाचाओं ने उठाया था । जयशंकर और उसकी माँ के बीच का संबंध जयशंकर के अहम के कारण बिगड़ जाता है। कालांतर में जयशंकर के स्वभाव में परिवर्तन आता है जिससे उसकी माँ के प्रति उसका पशुता वाला व्यवहार असहज लगता है । इतना पढ़ा-लिखा होने पर भी उसमें समझदारी की बात दिखाई नहीं देती है ।

'यामिनी कथा' में यामिनी और विश्वास का सबंध शारीरिक एवं मानसिक प्रेम पर आधारित है । विश्वास यामिनी को शारीरिक सुख तो देता है परंतु मानसिक धरातल पर उसे अधूरा छोड़ देता है । पुतूल और यामिनी सामाजिक, आर्थिक सुरक्षा पाने के लिए निखिल के साथ रिश्ता जोड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं । यामिनी निखिल से सारे सुख तो पाती हैं लेकिन साथ रहते समय यह सोचती है कि उसके बेटे पुतूल को क्या लगेगा और इस कारण से निखिल के प्रति उसका स्वभाव असहज हो जाता है । न वह सहज रुप से माँ बन पाती है न ही एक पत्नी की पूर्ण रुप से भूमिका निभा पाती है और परिवार में सदस्यों के बीच एक असहजता का भाव आ जाता है ।

6.11 मूल्य विघटन की समस्या :

मानव को मानव बने रहने के लिए उसमें कई मूल्यों का होना आवश्यक है जैसे दया, ममता, कर्तव्यपरायणता, प्यार, विश्वास, सत्य, त्याग, संस्कार, ईमानदारी, मातृभूमि के प्रति प्रेम ।

ये सारे मूल्य हमें अपनी पाठशाला में शिक्षा के माध्यम से और परिवार में व्यवहार के माध्यम से सिखाए जाते हैं । मानवीय मूल्यों के कारण ही हमारी भारतीय संस्कृति इतनी प्रख्यात है जिसका पालन आज भी समाज में किया जात रहा है । अगर मानवीय मूल्यों का विघटन होता है तो समाज में अराजकता आने की संभावना रहती है । मानवीय मूल्यों में दया, ममता, कर्तव्यपरायणता, प्यार, विश्वास, सत्य, त्याग, संस्कार, ईमानदारी, देशभक्ति के मूल्य हमें सिखाए जाते हैं ताकि हम देश के अच्छे नागरिकों का निर्माण कर सकते हैं ।

आस्था : मेरे संधिपत्र उपन्यास में शिवा का पति आरंभ से ही शिवा पर विश्वास नहीं करता और हमेशा उसे नीचा दिखाता रहता है जिसके कारण शिवा की आस्था को ठेस पहुँचती है परंतु फिर भी वह कुछ नहीं बोलती है ।

6.11.1 कर्तव्यपरायणता: भारत में हर रिश्ते में एक-दूसरे के प्रति कर्तव्य बनते हैं और अपनी जिम्मेदारी समझकर एक-दूसरे के प्रति अपना कर्तव्य निभाते हैं । परंतु 'दीक्षांत' उपन्यास में शर्मा सर का पात्र इतना निराशा में डूब जाता है कि वह अपने परिवार के प्रति अपनी कर्तव्यपरायणता को भूलकर आत्महत्या कर लेता है जिसके कारण उसकी पत्नी पर उसकी सारी जिम्मेदारियाँ आ जाती हैं ।

दया : सूर्यबाला के उपन्यास 'सुबह के इंतजार तक' में जब मीनू की बलात्कार वाली सच्चाई गोसाई दादा को पता चल जाती है तब बुलू और मीनू को घर से निकाल दिया जाता है ।

6.11.2 प्यार :

परिवार को, मनुष्य को मनुष्य से जोड़े रखने का काम प्यार करता है । जहाँ प्यार नहीं होता वहाँ संबंधों में दूरियाँ आ जाती हैं । सूर्यबाला के उपन्यास 'अग्निपंखी' में जयशंकर पहले तो अपनी माँ का सम्मान और प्यार करता था परंतु जब शहर अपने साथ झोंपड़ी में रहने के लिए लेकर गया था तब उसका रवैया अपनी माँ के प्रति बदल जाता है । वह प्यार अपनी माँ के लिए कहीं दृष्टिगत नहीं

होता । उल्टा वह अपनी माँ के प्रति संवेदनहीन हो जाता है और उसका अपमान करना शुरु कर देता है ।

6.11.3 विश्वास :

मनुष्य का मनुष्य पर जब विश्वास होता है तब हव उसी विश्वास के आधार पर बड़े से बड़ा कार्य भी कर देता है । परंतु आज के युग में किसी पर आसानी से विश्वास करना मुश्किल हो गया है । 'सुबह के इंतजार तक' में मीनू के माता-पिता मीनू को विश्वास के भरोसे ही मामा-मामी के घर भेज देते हैं जबकि वहाँ जाकर उस विश्वास को ठेस पहुँचती है। वहाँ मीनू के साथ अनहोनी घटना घट जाती है और उसका जीवन बर्बाद हो जाता है ।

6.11.4 सत्य :

सत्य सुनना आज के जमाने में किसी को अच्छा नहीं लगता । सत्य की राह पर चलना आज वर्तमान में बहुत ही मुश्किल है । सत्य की राह पर चलकर कुछ भी हासिल नहीं होता । सत्य बोलने के लिए हिम्मत और साहस की आवश्यकता है । सूर्यबाला के उपन्यास 'अग्निपंखी' में जयशंकर जब शहर नौकरी करता है तो वह वहाँ झोंपड़पट्टी में रहता है पर वह अपनी वहाँ की परिस्थिति यहाँ गाँव में नहीं बताता है । सत्य बोलने से वह अपनी निम्नता समझता है और सत्य छुपाकर रखता है ।

6.11.5 त्याग :

सूर्यबाला ने त्याग की भावना का भी चित्रण किया है अपने साहित्य में । 'मेरे संधिपत्र' उपन्यास में शिवा अपना पूरे जीवन का त्याग करती है । शादी के बाद वह अपने सपनों का, सादगी का, कशोर अवस्था का त्याग करती आती है । वह वहाँ सिर्फ त्याग की मूर्ति बन जाती है । पूरे परिवार के लिए वह केवल एक कठपुतली बन जाती है ।

6.11.6 ममता :

मातृत्व का आनंद हर स्त्री के लिए दुनिया का सबसे बड़ा आनंदित करने वाला क्षण होता है । परंतु आज यह भई खत्म होते देखा जा सकता है । सूर्यबाला के उपन्यास 'सुबह के इंतजार तक' में मीनू पर जब बलात्कार होता है तब उसे अपनी माँ के प्यार, ममता की आवश्यकता होती है परंतु उसी संघर्ष के समय में मीनू के माँ-बाप मीनू को दुत्कार देते हैं, उसका सहारा बनने के बजाय उसे समस्या की जड़ समझते हैं । उसके कारण समाज में उनकी साख-इज्जत कम हो रही है ऐसी उनकी सोच हो जाती है और मीनू की माँ की ममता भी कहीं खो जाती है ।

सूर्यबाला के उपन्यासों में हमें अनेक समस्याएँ देखने को मिलती हैं जिसमें सामाजिक समस्याओं के अंतर्गत नारी का शोषण, दहेज प्रथा, वर्ग-विग्रह, झोंपड़पट्टी की समस्या, बेरोजगारी की समस्या, गरीबी की समस्या, शिक्षा की समस्या आदि समस्याओं का उल्लेख देखने को मिलता है । इन सबमें सूर्यबाला ने पारिवारिक समस्याओं पर भी अपनी दृष्टि डाली है । अपने उपन्यासों के पात्रों, घटनाओं, प्रसंगों के आधार पर अनेक समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है जिसमें कोई भी छेड़छाड़ नहीं है । सूर्यबाला ने सीधे-सीधे अपने शब्दों में इन समस्याओं का विरोध किया है । सूर्यबाला द्वारा चित्रित समस्याओं को आज के आधुनिक युग में भी देखा जा सकता है ।

6.12 सूर्यबाला के कहानी साहित्य में निरुपित समस्याएँ:

वर्तमान समय में कहानी गद्य साहित्य की सर्वाधिक पसंद की जाने वाली विधा है । नाटक, उपन्यास आदि पढ़ने के लिए लोगों को अधिक समस्या और समय लगता है । परंतु कहानी पढ़ने में और उसके अपने आप से जोड़कर देखने में उन्हें अधिक समय नहीं लगता इसलिए कहानी साहित्य पढ़नेवालों की संख्या साहित्य की अन्य विधाओं से अधिक है ।

सूर्यबाला ने अपनी कहानियों में आस-पास घटित होनेवाली घटनाओं, प्रसंगों, पात्रों, देशकाल, भाषा को आधारभूत तत्त्व बनाकर समाज में व्याप्त कई समस्याओं को उजागर करने का प्रयत्न किया है । सूर्यबाला के कहानी साहित्य में समाज की समस्या का यथार्थ चित्रण किया है । इसी कारण सूर्यबाला की कहानियों में अत्यन्त मर्मस्पर्शी रुप पाठकों को देखने को मिलता है । उन्होंने अपनी कहानियों में ठोस कथानक, चरित्र चित्रण, भाषा, सजीव वातावरण को आधार बनाकर समस्याओं का चित्रण किया है जो पाठकों के मन पर गहरा असर करती है । उनकी कहानियाँ करुण विद्रुप की तीखी धार से युक्त है जो संवेदना की अहम गहराई में जाकर बहुत कुल मूल्य बात समेटकर ऊपर आ जाती है । आधुनिक काल में विज्ञान ने इतनी प्रगति कर ली है कि आविष्कारों के कारण हमारी अर्थव्यवस्था में काफी बदलाव आ गया है । औद्योगिकरण के कारण मनुष्य का जीवन मशीनी यंत्र की तरह बन गया है । पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान, धन-दौलत, सुख-समृद्धि प्राप्त करने के चक्कर में कई समस्याएँ जन्म लेती हैं जैसे माता-पिता, भाईःबहन, पति-पत्नी, पिता-पुत्री आदि के संबंधों में भी दरारें देखी जा सकती हैं ।

सूर्यबाला ने अपने कहानी संग्रहों में अनेक कहानियों का संग्रह किया है । सभी कहानियों के माध्यम से सूर्यबाला ने किसी न किसी सामाजिक या पारिवारिक समस्या का चित्रण किया है ।

सूर्यबाला हिंदी कहानी का एक चमकता हुआ नाम है । कहानी चाहे गरीब की हो, किसान की, मजदूर की, स्त्री पर होने वाले अत्याचार की या घर-परिवार की- हर वर्ग की कहानी को उतना ही सहजता, संवेदना और विश्वसनीयता से लिखा है । मानो हर वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रही हो । उनकी कहानी के पात्र संवेदनशीलता लिए हुए रहते हैं और उनके भीतर जीवन का संचार करती नजर आती है लेखिका । सूर्यबाला हिंदी कहानी का एक बड़ा चेहरा बन चुकी हैं । आज सूर्यबाला की कहानियों की यह खासियत है कि उनकी कहानियाँ बहुत खामोशी

से अपना राग-विराग रचती हैं । 'रहमदिल', 'न किन्नी न', 'दस्तावेज', 'आदमकद', 'दादी और रिमोट' आदि कहानियाँ पाठकों के मन को भा जाती हैं और ऐसी ही अपनी संवेदनशील कहानियों के माध्यम से उन्होंने भारतीय संस्कृति, समाज और समाज की अनेक समस्याओं का चित्रण यथार्थ रुप से किया है ।

6.12.1 नारी जीवन की समस्या :

स्त्री किसी भी परिवार के लिए आधारस्तंभ होती है । उसका परिवार मे अलग-अलग रुप होता है । हमारे पुरुष-प्रधान समाज में नारी का प्राचीन काल से शोषण किया जा रहा है। हमारी भारतीय संस्कृति में स्त्रियों की स्थिति दयनीय है। समाज में स्त्रियों को कई दुःखों का सामना करना पड़ता है । उसके जीवन में बचपन से लेकर हर उम्र में किसी न किसी रुप में स्त्री का शोषण किया जाता है । सूर्यबाला की कहानियों में स्त्रीयों का रुप थोड़ा-सा अलग है । उनकी कथा की नायिकायों को समाज में उन पर होनेवाले अत्याचार के खिलाफ विद्रोह करते हुए देखा जा सकता है । 'व्यभिचार' कहानी में लेखिका अपने पित के सामने पत्र पढ़ती है और पत्र लिखनेवाला उनसे मिलने की कामना करता है पर बड़े प्यार और सहज भाव से लेखिका उसे मना कर देती है । 'इसके सिवा' कहानी की नायिका असंतुष्ट है परंतु कवयित्री बन जाने पर वह आत्मकेन्द्रित हो जाती है और इसके बाद न ही उसे पति का ध्यान रहता है और न अपने बच्चों का । 'न किन्नी न' कहानी की नायिका स्वाभिमानी एवं आत्मनिर्भर होने पर भी परिस्थतियों से समझौता करती है । 'झील', 'कहाँ तक', 'कहो ना' कहानियों में स्त्री का अहंकारी रुप भी लेखिका ने बताया है । 'रमन की चाची' कहानी में चाची सुंदर होने के बाद भी उन्हें 'फुहड़' कहकर मानसिक चोट पहुँचाई जाती है । इसका परिणाम यह होता है कि अंतिम समय में भी नायिका के साथ कोई नहीं होता । सूर्यबाला की कहानी 'झील' की श्यामली मुझे कई अलग-अलग स्थानों पर मिली मगर उसके मन के भीतर बहुत तुफान है । 'सिर्फ तुम' कहानी में मुख्य पात्र अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को अपने पति पर थोप देती है । 'थाली भर चांद' की नायिका

अकडु और आत्मदंभी है जो हमेशा पड़ोसियों से जलती है । सूर्यबाला का कहना है कि हम बड़े-बड़े स्वप्नों को साकार करने के लिए और सुख पाने की लालसा में फिसल जाते हैं । छोटे-छोटे सुखों को नज़रअंदाज करते हैं । इस कहानी की भूमिका में लिखा है-"बहुत बड़ी-बड़ी भावनाएँ, बड़े ऊँचे तर्क और तर्क भावनाएँ।" संवेदनाओं की भी बात करते हैं।[8] 'मुक्तिपर्व' कहानी में नायिका अपने पति के मर जाने के बाद उसको न्याय दिलाने के लिए हमेशा प्रयत्न करती रहती है । बचपन में पिता, युवा होते ही पति और बुढ़ा होने पर बेटे के अधिन जीवन स्वीकार करना पड़ता है । फिर भी वह एक-एक जिम्मेदारी अच्छे से निभाती चली आती है । आज के आधुनिक समय की स्त्रियाँ शिक्षा समाप्त करने के बाद नौकरी करती हैं परंतु नौकरी के स्थल पर फिर घर पर भी उसे काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है । यह समस्या 'गैस' एवं 'सीखचों के आरपार' कहानी में बताई गई है । 'कात्यायनी संवाद' की नारी कहीं दुर्बल नहीं है । फिर भी पति की सेवा के लिए उसे मजबूर नहीं किया जाता परंतु वह स्वयं से ही बंधी रहना पसंद करती है । एक स्त्री परिवार में त्याग तो करती है परंतु अपने त्याग का कहीं पर भी ढिंढोरा पिटवाना नहीं चाहती और ऐसी स्त्रियों के कारण हमारी संस्कृति बची हुई है । नारी शोषण अथवा नारी की स्वतंत्रता से उसकी आत्मा, उसका आत्मबल बंधा हुआ है और इन्हीं मूल्यो को वह जीवनभर अपने पल्लू में बाँधकर रखती है । एक स्त्री पुरुष द्वारा किये जाने वाले शोषण से पूर्ण रुप से परिचित है । पति द्वारा त्याग दिये जाने पर सुमित्रा का दर्द अपनी दो बेटियों को पालते हुए, अकेलेपन को मूकबधिर होकर सहना और अपना विरोध प्रगट न करना यह 'सुमितरा की बेटियाँ' कहानी में देखने को मिलता है । 'आदमकद' की मामी कुरुप है परंतु फिर भी चरित्र से संपन्न है । वह अपने मक्कार पति के साथ रहकर सारे दुःख झेलती है परंतु उसे कुछ कहती नहीं है । उसकी सारी यातनाएँ सहती रहती है। एक स्त्री वात्सल्य की मूर्ती होती है । 'उत्तरार्द्ध' कहानी में एक माँ अपने वात्सल्य के चलते अपने खुद के अस्तित्व तक को भूला देती है । ऐसा वात्सल्य

हम –सलामत जागीरें' कहानी में भी देख सकते हैं । नारी अपना स्वभाव नहीं बदल सकती यह बात 'एक स्त्री के कारनामे' कहानी में बताई है । इस कहानी की स्त्री विद्रोह की भावना रखती है । 'कब्जा' कहानी की पत्नी अपने पति की सेवा में ही खोई हुई रहती है । आज की महिलाएँ समाज में सम्मान से जीना चाहती हैं । सूर्यबाला के नारी पात्र बड़े मंद हैं । वे समाज की कुरीतियों का विद्रोह करते नज़र नहीं आते पर संघर्ष जरुर करते हैं ।

सूर्यबाला की कहानियों में नारी शोषण की बात की गई है । नारी का शोषण समाज में उसके अपने परिवार में अलग-अलग रुपों में किया जाता है जिसका यथार्थ एवं संवेदनशील चित्रण सूर्यबाला ने अपनी कहानियों के माध्यम से किया है । सूर्यबाला की स्त्री पात्र हमेशा निराशा और हताशा में डुबी हुई है और अपने आत्म-सम्मान की लड़ाई लड़ना जानती है । एक माँ, बेटी, बहन, पत्नी आदि भूमिकाओं में उसे किसी न किसी रुप में शोषण का सामना करना ही पड़ता है ।

6.12.2 आर्थिक समस्याएँ:

भारत देश जब से आज़ाद हुआ है तब से देश में गरीबी उन्मूलन के लिए सरकार द्वारा कई योजनाएँ अमल में लायी गयीं परंतु आज़ादी के इतने वर्ष बित जाने पर भी यह समस्य जस की तस बनी हुई है । आज के आधुनिक युग में गरीब वर्ग और गरीब व आर्थिक रुप से संपन्न लोगों में और संपन्नता आ रही है । इसका परिणाम यह होता है कि गरीबी की समस्या के कारण परिवार को, समाज को कई अन्य समस्याओं का सामना करना पड़ता है। 'एक इन्द्रधनुष जुबेदा के नाम' कहानी में भी इसी समस्या से जूझते हुए पिता का चित्रण सूर्यबाला ने किया है । जैसे ही जुबी का पत्र एक पिता के हाथ लगता है तब वह उसके आने की तैयारियों के लिए सालों से कव्वाली नहीं की थी परंतु बेटी के आने की खुशी में वह अपना प्राण तोड़ देता है। वह आर्थिक परिस्थिति को झेलता है, उसके घर की हालत खस्ता है, घर की दीवारों में सीलन लग गई है । 'वे जरी के फूल' कहानी हजारों गरीब रुक्कियों की कहानी है जो आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण अपना

घर-परिवार बसाने में नाकामियाब हैं । उनमें गुण होने के बाद भी गरीब होने के कारण गरीबी जैसा दुर्गुण शादी में विघ्न डालता है और इस वजह से लड़कियाँ शादी के लिए दहेज देने में असमर्थ हैं । 'जेब्रा' कहानी का जेब्रा भी गरीबी के कारण ही बालमजदूरी करने के लिए मजबूर है । उसे सब लोग उपेक्षा की नज़र से देखते हैं, परंतु फिर भी वह काम माँगना बंद नहीं करता है । 'सुखांतकी' कहानी का पात्र अपने गाँव जाने के लिए लेखिका से दस रुपए माँगता है और भिख माँगने के लिए भी मजबूर हो जाता है । लेखिका के शब्दों में ही देखें तो लेखिका कहती हैं- 'वह यही आदमी है जिसकी पत्नी का देहांत कल ही हुआ है परंतु दस रुपए पाने की खुशी में वह यह भी भूल गया है ।" आज गरीबी एक ऐसी समस्या है जिसको मिटाने के लिए लोग अपने मानवीय मूल्यों तक का त्याग कर देते हैं । इस समस्या के कारण समाज में, देश में और अन्य समस्याएँ भी जन्म लेती हैं । 'भुक्खड़ की औलाद' कहानी अर्थ (पैसों) के सामने मानव का कोई अर्थ नहीं है इस बात को उजागर करती है । गाँव में बसने वाले लोग आर्थिक रुप से परेशान होकर शहरों की ओर पलायन करते हैं । आर्थिक स्थिति इतनी खराब है कि भाड़ में बह गई पत्नी की चिंता न करके अपनी आय के एकमात्र साधन भैंस के बह जाने का दुःख अधिक होता है । 'कपड़े' कहानी में अब्दुल को काम करना पड़ता है क्योंकि वह अत्यंत गरीब है । उसका बाप चोरी करता है क्योंकि गरीबी के कारण ऐसा करना पड़ता है । गरीबी की समस्या बच्चे से उसकी मासूमियत तक छिन लेती है । गरीबी को लेकर दुष्यंत कुमार कहते हैं "कहाँ तो तय था चिरागों हर एक घर के लिए, कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए" यही स्थिति हर जगह देखने को मिलती है । मनुष्य को हम स्वार्थी बनता हुआ देख सकते हैं और स्वार्थी चरित्र के कारण ही उसका पतन निश्चित बनता है । हमारी जीवन की आस्थाओं, पारिवारिक संबंधों, सहज मानवीय वृत्तियों को इस आधुनिक तथा भौतिकता ने मिलकर अर्थहीन कर के रखा है । 'उत्सव' कहानी का विषय भी यही है । मध्यमवर्गीय परिवार गरीबी के कारण हर त्यौहार मनाने के लिए बाधित

नहीं रहते हैं । सूर्यबाला अपनी कहानी 'पूर्णाहूति' में लिखती हैं- "वजह रोटी नहीं बहुत सारी रोटियों की हवस है । हम बहुत सारी रोटियों पर बहुत-सा घी चुपड़कर सबके हिस्से की रोटियाँ खुद हजम कर जाना चाहते हैं ।" सूर्यबाला ने इस तरह अपनी कहानियों में आर्थिक समस्या को ध्यान में रखते हुए अपनी कहानियों के माध्यम से इसको समाज के सामने प्रस्तुत किया है ।

6.12.3 बेरोजगारी की समस्या:

भारत में बेरोजगारी की समस्या ने इतना विकराल रुप धारण कर लिया है कि यह देश की सबसे बड़ी समस्या के रुप में दृष्टिगत हो रही है । वर्तमान समय में युवा वर्ग उच्च शिक्षा प्राप्त करके भी बेरोजगारों की श्रेणी में आ गया है । इससे युवा पीढ़ी में हताशा, निराशा घर करती जा रही है । यवाओं के पास उच्च डिग्रियाँ होकर भी रोजगारी प्राप्त नहीं होती । यहाँ तक कि अगर छोटी नौकरी भी प्राप्त करनी है तो किसी की सिफारिश या फिर रिश्वत का सहारा लेना पड़ता है । परिवार में शिक्षित सभ्यों की संख्या होने पर भी नौकरियों का अभाव देखा जाता है । 'कंगाल' कहानी में कथा का मुख्य पात्र बेरोजगारी से लाचार हो जाता है । "बारी-बारी सबके द्वारा दुहराई जानेवाली सांत्वना, जिनके अंदर मैं अनचाहे चुनता चला जा रहा हूँ । आखिर कैसे मैं इतना असहाय, लाचार होता चला गया? सबके अपने-अपने ढंग हैं । किसी ने साग-भाजी मँगाने के बाद हिसाब नहीं लिया, किसी ने टेरालीन की मजबूत शर्ट ला दी, किसी ने इंटरव्यू के लिए जाते समय जबरदस्ती बीस रुपये थमा दिये। यह बेरोजगारी क्या बस, बस आर्थिक तंगहाली है?"[9] यह लाचारी आज हम भारत के हर युवा में देख सकते हैं । यहाँ पर नौकरी न मिलने पर यहाँ का युवा विदेश में जाकर काम करने को मजबूर हो जाता है । अखबारों में देश की ज्वलंत समस्याओं पर हेडलाइनें हैं । संपादकीय या फिर विशेष रपटें... जिनका सारांश होता है कि 'यह अपने देश का दुर्भाग्य है कि इस मिट्टी में उपजे, पले और शिक्षाप्राप्त उच्च तकनीकी संस्थाओं के मेधावी छात्र अपने देश में रहना ही नहीं चाहते । चिकित्सा प्रबंधन-टेक्नोलॉजी में छात्र

इसलिए दाखिला लेते हैं कि जिससे विदेशों में जाकर अपनी परिस्थिति को बदल सकें । काश! हमारे देश में प्रगति समृद्धि कि दिशा युवा को प्रदान की जाती यह समस्या उत्पन्न नहीं होती । 'मानुष गंध' के वैभव के पात्र द्वारा लेखिका ने उच्च शिक्षा प्राप्त युवाओं की त्रासदी का चित्रण किया है । क्योंकि भारत जैसा देश अपने युवाओं को उनके अनुकूल परिस्थितियाँ देने में असमर्थ है इसलिए उच्च शिक्षित युवा देश छोड़ने के लिए मजबुर हो जाते हैं ।

सूर्यबाला की 'सुलह' कहानी का कथानक भी ऐसा ही है । पात्र अपनी नौकरी को बचाने के लिए साहब के सामने कितनी कोशिशें करता है लेकिन इसके बावजूद भी उसके सामने नौकरी प्राप्त करने वालों की लिस्ट में उसका नाम नहीं होता । "रखी जाने वाली लिस्ट वह तीन बार पढ़ता है और बाद में भी उसे ऐसा लगता है कोई चूक हुई है । उसका नाम लिस्ट में अवश्य होगा । उसने किसी और से पढ़वाकर भी देखना चाहा मगर वह मजाक बन जायेगा यह सोचकर रुक गया ।"[10] इस प्रकार बड़ी कोशिशें करने के बाद भी उसका नाम लिस्ट में नहीं होता। कई बार नौकरी तो मिल जाती है परंतु कब आपको नौकरी से बेदखल कर दिया जायेगा इसका आपको अंदाजा नहीं होता । कई बार कंपनियों के बंद होने पर भी युवाओं का यह हाल हो जाता है और इसका सबसे बड़ा असर उस कंपनी के मजदूरों और उनके परिवारों पर पड़ता है ।

'खुशहाल' कहानी में भी कई मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया जाता है। कथा का नायक बेबात पर चाँटा मार देता है । वर्मा का यह असल में अपमान होता है परंतु लाचारी के कारण वह कुछ बोल नहीं पाता । क्योंकि उसकी नौकरी सुपरवाइज़र के हाथों में थी । अगर वह अपने अपमान का बदला लेने की सोचता तो उसकी नौकरी जाने का डर रहता । ऐसा व्यवहार आज भी कई सार्वजनिक स्थलों पर अपने मजदूरों के साथ किया जाता है ।

नौकरी की जगह अगर आपको प्रमोशन प्राप्त करना है तो आपको बड़े-बड़े साहबों की चापलुसी करनी पड़ती है । एक सामान्य आदमी भी प्रमोशन पाने

की दौड़ मे दोड़ रहा है । 'इसके सिवा' कहानी में सूर्यबाला ने इसी बात की ओर संकेत किया है । प्रस्तुत कहानी का नायक ईमानदारी से अपने प्रमोशन की राह देखता है । मिस्टर गुप्ता की जानलेवा विमान दुर्घटना के बाद ही सारा माहौल धुँधलाता नज़र आता है । चारों ओर मैनेजर की कुर्सी को हथिया लेने की होड़ लग गयी थी । हर कोई इसके लिए प्रयत्न कर रहा था, हर कोई घात लगए बैठा था, सब अपनी तरफ से प्रयत्न कर रहे थे ।

'संताप' कहानी में चापलूसी करके ही हेमंत प्रमोशन प्राप्त करता है । अपने अफसरों के घर के काम तक वह कर देता है । साहब के घर का बाथरुम ठीक करवाता है, उनके बच्चों को मेथ्स करवाना, मैडम के लिए सिरदर्द की दवाई लाना । प्रमोशन पाने की होड़ इतनी है कि अपने चरित्र के साथ भी समझौता करने से लोग पीछे नहीं हटते ।

देश में बेरोजगारी की समस्या ने इतना विकराल स्वरुप धारण कर लिया है कि आज की युवा पीढ़ी इसके कारण आत्महत्या करने के लिए तक मजबूर हो जाती है । इस तरह देश की युवा पीढ़ी बेरोजगारी की समस्या के कारण हासिये में जा रही है । सूर्यबाला ने अपनी कहानियों के माध्यम से इस समस्या पर प्रकाश डाला है ।

6.12.4 वृद्धों की समस्या :

भारत में परिवारों में प्राचीन काल से ही घर के वृद्धों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है । वे घर के बड़े-बूढ़े होने के कारण घर-परिवार के ज्यादातर फैसले उन्हं पूछकर लिए जाते हैं। भारतीय संस्कृति में आज भी वृद्धों का सम्मान, आशीर्वाद सर्वोपरि माना जाता है । आज भी हम संयुक्त परिवारों में वृद्धों की समझ को सराहते हैं । एकल परिवार में वृद्धों की स्थिति संयुक्त परिवार से थोड़ी विपरित होती है ।

आज के आधुनिक युग में वृद्धों की स्थिति में परिवर्तन आया है । वृद्धों को घर-परिवार में अब बोझ समझा जाता है । उन्हें एकलता का जीवन जीना पड़ता

है । सूर्यबाला की 'निर्वासित' कहानी में आर्थिक रुप से अक्षमता का कारण बताकर दोनों बेटे अपने माता-पिता को बाँट देते हैं । जिससे दोनों माता-पिता दुःखी हो जाते हैं और उनकी स्थिति दयनीय हो जाती है । 'पड़ाव' कहानी में वृद्धों के रिश्तेदार वृद्धों का शोषण करते दिखाई देते हैं । बिना सहानुभूति और प्रेम के वृद्ध जीवन काटना कितना मुश्किल होता है यह सूर्यबाला की कहानियों से सिद्ध हो जाता है । 'सौगात' कहानी में एक ससुर की नियति बहु की ताबेदारी में रहने की ही रह जाती है । 'बाऊजी और बंदर' कहानी में बुढ़े बाऊजी गाँव में नहीं रहना चाहते । वह अपने बेटे और बहु-पोते के पास रहना चाहते हैं । परंतु उन्हें वहाँ उपेक्षा मिलती है और उन्हें बंदरों को भगाने का काम सौंपा जाता है । घर में प्रेम, संवेदना न मिलने के कारण बाऊजी बंदर भगाने में ही पूरा दिन व्यतित करते हैं । वह पशुओं के बीच समय व्यतीत करने के लिए मजबूर हो जाते है ।

आज मनुष्य काम में इतना व्यस्त है कि उसे घर के बड़े-बुढ़ों के पास बैठने का भी समय नहीं मिलता । दूसरी कहानी 'समापन' है जहाँ माता-पिता को अपने बेटे से सहानुभूति तक नहीं मिल पाती । 'माय नेम इज़ तात' कहानी में माँ को वात्सल्य और दया, माया, ममता की मूर्ति को रुप में न देखकर एक उपयोगिता के मापदंड पर नापा जाता है । उसे नौकरानी की तरह उपेक्षित माना जाता है । परंतु नौकरानी जब नहीं आती तो वही माँ संभालने के लिए काम आ जाती है । 'साँझवती' कहानी में माता-पिता को अलग कर दिया गया है । अपने ही माता-पिता को संभालना अब बेटे के लिए बोझ बन गया है । उन्हें परिवार में उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाता है । इतना बुरा बर्ताव करने के पश्चात भी माँ-बाप अपने बच्चों को आशीर्वाद ही देते हैं । वे उनसे कोई अपेक्षा नहीं रखते हैं और फिर भी खुश रहने का प्रयत्न करते हैं । प्रस्तुत कहानी में दंपति बुढ़ापे में भी अलग रहते हैं । अपनी पत्नी से मिलने के लिए भी वृद्ध को लंबा इंतज़ार करना पड़ता है ।

आज की युवा पीढ़ी में अपने माता-पिता के प्रति दृष्टिकोण बदल गया है । वे अपनी सुख-सुविधाओं में अपने माता-पिता की मानसिक, शारीरिक जरुरतों को भूल जाते हैं और अपने माता-पिता के प्रति अपने कर्तव्यदाता को भूला देते हैं। उनमें संवेदना शून्य हो जाती है । सूर्यबाला की कहानी 'दादी और रिमोट' कहानी में दादी मनोरंजन के नाम पर टी.वी. से ही मित्रता कर लेती है क्योंकि सब लोग अपने-अपने काम के लिए बाहर चले जाते हैं । बच्चे भी स्कूल जाते हैं । टी.वी. के अलावा दादी के पास कोई और सहारा नहीं है ।

सूर्यबाला की कहानी 'जश्न' में बच्चे अपने माता-पिता की मौत की कामना करते हुए हम देख सकते हैं । यहाँ तो इस कहानी में मानव की संवेदनहीनता की हद पार हो गई है । माँ-बाप की यह कामना होती है कि जीवन के आखरी दिन अपने बच्चों के साथ रहें । परंतु वही बच्चे अपने माता-पिता की मौत की राह देखते हैं । माता-पिता आखरी साँस तक अपने बच्चों का कभी बुरा नहीं चाहते परंतु बच्चे अपने माँ-बाप की मौत को ढूँढते हैं । 'क्या मालूम' कहानी में वृद्ध महिला अपनी जवानी के दिन याद करती है । वह अपनी पोतियों के साथ अपने सुखी जीवन की यादों को ताजा कर लेती है । जब घर के बहु-बेटा काम पर चले जाते हैं तो घर की पूरी जिम्मेदारी वृद्धों के सर पर आ जाती है । इन जिम्मेदारियों को निभाते-निभाते उनका जीवन चुनौतीभरा हो जाता है । 'मौज' कहानी में वृद्धों की इसी परिस्थिति को हम देखते हैं ।

पहले जमाने में घर में वृद्धों का मान-सम्मान घर में सबसे अधिक रहता था। परंतु आज परिवारों में वृद्धों को उपेक्षित दृष्टि से देखा जाता है । पहले जब वे कुछ कहते थे या करते थे तो उनके शब्दों को, बातों को अधिक महत्त्व दिया जाता था। परंतु आज परिस्थितियाँ इसेक विपरित हो गई हैं । अधिकतर परिवारों में अभी भी यह परंपरा बरकरार है । परंतु कुछ परिवारों में वृद्धों को बड़ी त्रासदी से गुजरना पड़ता है । आज शिक्षा और शहरीकरण बढ़ गया है परंतु फिर भी वृद्धों के प्रति युवा पीढ़ी के देखने का नजरिया नहीं बदला है । अधिकतर परिवारों

में उनको उपयोगिता के आधार पर ही रखा जाता है । इसके कारण ही हम आज वर्तमान समय में वृद्धाश्रमों की संख्या बढ़ते हुए देख सकते हैं क्योंकि संयुक्त परिवार परंपरा में न रहकर आजकल की पीढ़ी एकल परिवार में रहना चाहती है। वह अपने जीवन में किसी भी तरह की दखलअंदाज़ी नहीं चाहते । अपनी सुख-सुविधाओं को अधिक महत्त्वपूर्ण समझते हैं । इसलिए वे अपने वृद्ध माता-पिता को वृद्धाश्रमों में छोड़कर आते हैं । वृद्धाश्रमों की स्थापना के लिए अन्य पारिवारिक कारण भी होते हैं ।

सूर्यबाला ने समाज में स्थित अनेक समस्याओं को अपनी कहानियों के माध्यम से चित्रित किया है जिसमें वृद्धों की समस्या का भी समावेश किया है । सूर्यबाला ने इस समस्या का घटना, प्रसंगों, पात्रों के आधार पर यथार्थ और संवेदनशील वर्णन किया है ।

6.12.5 सांप्रदायिकता (दंगों की) समस्या :

आज जब हम समाचार पत्र पढ़ते हैं, सोशियल मीडिया देखते हैं, टी.वी. देखते हैं तो हर तरफ से हमें आतंकवाद, दंगे-फसाद, खून, चोरी, डकैती, मर्डर, नक्सलवाद की खबरें देखने को मिलती हैं । आज समाज में इतनी अनिश्चितता है कि किस घड़ी क्या हो जाए कुछ कहा नहीं जा सकता । अब समाज में यह घटना, प्रसंग आम हो गये हैं । महानगरों, गाँव, देश का कोई भी कोना ऐसा नहीं बचा जहाँ पर अनिश्चित बनाव न बनते हों । हर जगह भयानकता और दहशतवाद, भय का वातावरण देखने को मिलता है । लोगों में संवेदनशीलता इतनी कम हो गई है कि कोई किसी की मदद के ले आगे नहीं आता । सूर्यबाला की कहानियाँ भी इन समस्याओं को उजागर करने में पीछे नहीं है । उनकी 'गृहप्रवेश', 'उजास' आदि कहानियाँ इसी का जीवंत उदाहरण हैं । 'गृहप्रवेश' में लेखिका दंगों के भय का वर्णन अपने शब्दों में करते हुए कहती है "पूरे चौक एरिया में जबरदस्त सनसनी है । दुकानों के शटर खटाखट बंद हो जाते हैं । सड़कें सुनी हैं, सब दुकान-डलिया समेटे जल्दी-जल्दी घर भागने की तैयारी में हैं । अजब बदहवासी का

आलम है । बाज़ार सड़क देखते-देखते ही वीरान हो जाती हैं । गश्ती पुलिस के सिपाही बेरहमी से डंडे ठकठकाते घूम रहे हैं ।"[11] आज के समाज में नक्सलवादी दंगे हों, आतंकवादी हमले या फिर सांप्रदायिक दंगे हों, इसकी भयानकता हर शहर, गाँव में देखने को मिल जाती है । आये दिन हम चोरी, डकेती, मर्डर, खून आदि की वारदातें सुन-सुनकर अपने मन में भयानकता का डर बैठा लेते हैं । आज का वर्तमान युग ऐसा हो गया है कि हम किस पर विश्वास करें और किस पर नहीं इतनी समाज में त्रासदी फैली हुई है । 'गृहप्रवेश' कहानी में मनोज कथा के नायक से पूछता है 'क्यों नहीं कहते कि एरिया में अंधेरा घिरने के बाद लोग अकेले-दुकेले निकलने से कतराते हैं? आजकल तो सिविल लाइंस के आगे-पिछे चोरीचकारी, लूटपाट की समस्या आम है ।[12] आज के आधुनिक बारत की यही परिस्थिति हो गई है । सांप्रदायिकता के कट्टरवादी भाव के कारण कितने ही लोगों ने अपनी जान गँवाई है । आज के युग में ट्रेनों में आग लगा दी जाती है । नक्सलवादी अपने इलाके में निर्दोष अफसरों का अपहरण कर उन्हें जान से मार डालते हैं । कब कहां क्या हो सकता है यह कहा नहीं जा सकता । आज केवल भारत ही नहीं पूरा विश्व आतंकवाद जैसी समस्या से जूझ रहा है । जिससे देश की सार्वजनिक संपत्ति, मानव-जीवन को बड़ा नुकसान होता है ।

इतने दंगे-फसाद होने पर भी हमें भारत में कहीं-कहीं शहरों, गाँवों में सांप्रदायिक एकता दिखाई देती है । दंगा फेलाने वाले लोग धर्म के नाम पर दो कौमों के बीच फूट डालकर अपना राजनैतिक उल्लू सीधा करते हैं । हमारे देश में अनेक धर्म, संप्रधाय के लोग निवास करते हैं परंतु यह परिस्थितियाँ हमें देखने को मिलती हैं । सूर्यबाला ने अपनी कहानी 'सौदागर दुआओं' में इसी समस्या का पर्दाफास किया है । 'सौदागर दुआओ' में पीर सैयद जैक्सन से कहते हैं "हिन्दुस्तान की कौम में अपना-पराया, हमारा-तुम्हारा जैसी बातें औछी किस्म की समझी जाती हैं । हम हिन्दुस्तानी बँटने-बिखरने से बेहद डरते हैं । अब एक ही

घर के बरतन हैं तो खटकेंगे जरुर साहब! इसी बिना पर थाली-रकी, बटलोही, कड़ाही को अलग-अलग ताखों में तो नहीं रखा जाता ना ।"

भारत में विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं परंतु वे आपस में एक-दूसरे के सारे त्यौहार मनाते हैं । एक-दूसरे के त्यौहारों में शरीक होते हैं । परंतु जैसे ही दंगे हैतो हैं इन सब प्रयासों को भूला दिया जाता है । सूर्यबाला ने भारत की इसी समस्या का अपनी कहानियों के माध्यम से सटीक चित्रण किया है ।

6.12.6 भ्रष्टाचार की समस्या:

आज भ्रष्टाचार एक ऐसी समस्या बन गई है कि पूरे विश्व में इसकी जड़ें इतनी मजबूत हो गयी हैं कि हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार दृष्टिगत होता है । जो भी इसका विरोध करता है उसका बहिष्कार किया जाता है । सूर्यबाला द्वारा रचित कहानी 'मुक्तिपर्व', 'होगी जय, होगी जय, हे.. पुरुषोत्तम नवीन!' 'हाँ, लाल पलाश के फूल नहींला सकूँगा' जैसी कहानियाँ इसी समस्या का एक उदाहरण हैं । 'मुक्तिपर्व' कहानी में एक को ईमानदारी की वजह से और दूसरे को पैसे न खाने के कारण और न देने के कारण कई आरोप लगाये जाते हैं क्योंकि वे इंस्टिट्यूट का पैसा अपने निजी उपयोग के लिए प्रयुक्त कर रहे हैं और उपयोग के नाम से अपने घर में विदेशी उपकरण भर रहे हैं । वे अपनी मनमानी करके इंस्टिट्यू में नियुक्तियाँ करके राजनीति का अखाड़ा बना रहे हैं । वे दूसरे जो वैज्ञानिक शोध कार्य कर रहे हैं उन पर अपना लैबल लगाकर बता रहे हैं । उनकी मेहनत और लगन के आधार पर ख्याति प्राप्त कर रहे हैं । इन्हीं आरोपों के आधार पर निलंबन किया जाता है । कहानी में मनचंदा जैसे लोग हैं जो हमारे आज के भ्रष्टाचारी लोगों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं जो दूसरों की मेहनत पर अपना ठप्पा लगाकर ख्याति प्राप्त कर रहे हैं जिसके कारण एस.के. जैसे लोग भुगत रहे हैं । 'होगी जय, होगी जय... हे पुरुषोत्तम नवीन!' में फॉरेस्ट में काम करने वाले अरुण वर्मा ने एम.एल.ए. के भतीजे का ट्रक पकड़ा था मगर सब अरुण वर्मा को समझाते हैं कि इस मामले को कुछ ले-देकर ऐसे ही सुलझा ले। मगर अरुण वर्मा मना कर देता है जिसके

कारण अरुण वर्मा को नौकरी से सस्पेंड कर दिया जाता है । अरुण वर्मा का परिचय देते हुए लेखिका कहती हैं "उत्तेजना की लपटें तो फैलती हैं जब अरुण वर्मा कोई ट्रक पकड़ते हैं ! क्योंकि कपड़ते हैं तो किसी भी हालत में छोड़ते नहीं हैं । उल्टा ट्रक पकड़े जाने पर न मटन-पुलाव बन पाता है, न चिकन-बिरयानी; उल्टे फाकतो पखवारो सनसनी, हलचल, इंकवायरी, बैठकें। कुल मिलाकर महिनों लग जाते हैं ।[13] अरुण वर्मा को लगता है कि लोग उसका साथ दें, गलत कामों का विरोध करें, परंतु लोग उसे ही उसके काम के लिए गलत साबित करने में लगे हुए हैं । ऊपर से लोग कहते हैं । ये सुनने के बाद अरुण वर्मा कहता है 'इतना समझ लो, आदमी शगल के लिए नहीं करता यह सब । चाहता कोई नहीं, लेकिन बस, करना पड़ता है । ये सुनने के पश्चात् अरुण वर्मा यह सोचता है कि वो कुछ और करेंगे। जैसे गलत बात को गलत कहने में हिम्मत भी जुटाने को आज लोग असफल हैं । अगर सारी दुनिया में भ्रष्टाचार का विरोध होने लगे तो शायद परिस्थतियों में कुछ सुधार आ सकता है । सत्यम शिवम और सुंदरता से युक्त जैसी कथा का नायक के पिता के काल में हुआ करता था । कोई भी वजह या कारण ना होने पर भी जब पिता को सस्पेंड किया गया था तब पिता ने माफी माँगने से इनकार कर दिया था और इसलिए समाज ने इस बात को सराहा था। शहर के बड़े-बड़े अखबारों में पिताजी की सभी ने सुध ली थी । उनके इस कार्य के लिए सभी बुद्धिजीवियों, प्रमुख मुख्य नागरिकों ने इसे अन्यायपूर्ण व्यवहार बताया था । दूसरे दिन पिताजी के ऑफिस जाने पर विभाग के आधे से ज्यादा कर्मचारियों ने अपने इस्तीफे तैयार रखे थे और इसके कारण ही डायरेक्टर को क्षमा याचना के साथ अपना ऑर्डर वापस लेना पड़ा था । कथा का नायक भी अपने पिता की वंश परंपरा को संभाल कर रखता है और उनका उदाहरण देकर समाज में जागृति लाना चाहता है । ईमानदारी से काम करने पर भी उसका तबादला कर दिया जाता है परंतु फिर भी वह अपना पक्ष नहीं छोड़ता । समाज से मिल रही हताशा निराशा में भी वह अपने पिता की बताई राह को नहीं छोड़ता

और अपने उसूलों पर बना रहता है । 'हाँ, लाल पलाश के फूल न ला सकूँगा' कहानी में एक ईमानदार व्यक्ति को पुलिस पकड़कर ले जाती है । भ्रष्टाचार की जड़ें इतनी गहरी और मजबूत हो चुकी हैं कि अब इन जड़ों को मूल से उखाड़ना नामुमकिन लगता है । भ्रष्टाचार के इस जाल को तोड़ने के लिए समाज में रह रहे लोगों को ही मिलकर, एकजूट होकर ठोस कदम उठाने होंगे तभी भ्रष्टाचार को कुछ हद तक कम किया जा सकता है ।

सूर्यबाला ने अपनी कहानियों के माध्यम से भ्रष्टाचार जैसे दुराचार के विषय में पात्र, घटना, प्रसंगों के आधार पर पूर जोर से इसका विरोध किया है ।

6.12.7 महानगरीय जीवन की समस्या :

आज का आधुनिक युग तेज गति से प्रगति कर रहा है । हर क्षेत्र में हम विकास देख सकते हैं । वाहन-व्यवहार में, संचार माध्यम में, टेक्नोलॉजी के विकास आदि में बदलाव आ गया है । गाँव से लेकर शहरों तक यह विकास हम देख सकते हैं । गाँवों में भी सारी सुविधाएँ उपलब्ध होने लग गई हैं । परंतु फिर भी आज के आधुनिक युग का मानव व्यापार, नौकरी, शिक्षा प्राप्त करने के लिए शहरों की ओर पलायन करता है और फिर एक सामान्य मनुष्य की जीवन जीने की जद्दोजहद शुरु हो जाती है । गाँव छोड़ते ही एक आम आदमी को शहर में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है । सूर्यबाला की कहानियों में महानगरीय जीवन शैली में क्या-क्या समस्याएँ आती हैं उसे दर्शाया है । कहानियों के माध्यम से शहरों में मानवता देखने को भी नहीं मिलती, सबके सब अपने स्वार्थ के लिए जीते हैं और उनके जीवन में इतनी व्यस्तता होती है कि वे मानसिक रुप से भी परेशान रहते हैं । शहरी जीवन में बड़े-बड़े टॉवर देखने को मिलते हैं जहाँ रहने की समस्या, खाने-पीने की समस्या, नौकरी की समस्या, उत्पन्न होती है। हर जगह काँक्रीट की सड़कें, घर नज़र आते हैं । सूर्यबाला की कहानी 'लॉन की जबानी' में लेखिका ने लॉन का मानवीकरण करके शहर की समस्याओं को उजागर किया है । शहरों में मानव की सहज प्रवृत्तियों पर असर पड़ रहा है, लॉन

का मानवीकरण करके सूर्यबाला ने शहरी लोकजीवन का कुछ ऐसा वर्णन किया है, जैसे हँसना, बोलना, मजा-खेलना-कूदना, चिल्लाना, झगड़ा करना, बच्चों का शोर मचाना, अब शहरों से दूर होता नज़र आ रहा है । लॉन अमीर लोगों के यहाँ बनी हुई है जो सारी सुख-सुविधाओं से युक्त है और यही लॉन अपने आप से संवाद करती है - फिर भी कुछ है जो मैं तलाशता रहता हूँ पड़े-पड़े अपने चारों ओर- जैसे जब भी कभी शाम को घंटे आधे घंटे के लिए देशी-विदेशी साहबों की आयाएँ अपने-अपने गोलमटोल बाबाओं, बेबियों को हवाखोरी के लिए लेकर आती हैं- मैं एक अनाम सुख से भर उठता हूँ ।[14] मेरा मन करता है, मैं बच्चों से कहूँ "आओ, मेरे पेट पर खुब उछलो-कूदो, कलामंडियाँ खाओ। गुत्थमगुत्थी, कुस्तमकुश्ती हो जाओ ।[15] आयाओं, चटाकेदार खबरें सुना अपने साहबों और मेडमों की ... लेकिन इस कॉम्प्लेक्स की आयाएँ और बच्चे, बच्चों की तरह आखिर हँस क्यों नहीं पाते[16] । एक दुधिया मुक्त हँसी, एक चहकती किलकारी सुनने का मेरी शिराओं में भरता रोमांच, अचानक फुस्स हो जाता है ।17 'लॉन' कहानी के माध्यम से सूर्यबाला बताना चाहती हैं कि पाश्चात्य संस्कृति के चक्कर में शहरी जीवन शैली जीने वाले लोग किस तरह अपने आप से भी बिछड़ते जा रहे हैं और अपनी छोटी-मोटी खुशियों का, अपने एटिकेट्स और एटिट्यूड में जीवन का असली मजा खो देते हैं ।

सूर्यबाला की कहानी 'इस धरती के लिए' में जमीन का एक छोटा टुकड़ा अपनी यादों में खोकर कहता है "इन नन्हीं बच्चियों ने मुझ पर पूरा संसार, एक पूरी सभ्यता बसा रखी थी। वे मेरी मिट्टी खोदकर चुल्हा बनाती थी। उस मिट्टी का आटा गुँथ रोटियाँ थोपती थी।" इस जमीन के टुकड़े पर एक अलग कहानी जन्म लेती है । उस बचपन की भरी-पूरी सभ्यता को क्रमानुसार 'इस धरती' ने देखा है। अनेक बंधनों से बँधे हुए शहरों के लोग इसे जमीन का टुकड़ा कहते हैं । आज यह जमीन का टुकड़ा मनुष्य की आवाजें सुनने के लिए तरसता है । बरसों से कलेजा फाड़ देने वाले किसी क्रंदन, किसी विलाप से अंदर जमी बर्फ को पिघले

मैदान कहता है "मैं भूल गया हूँ कि आदमी कैसे हँसता है, कैसे रोता है, कैसे खुशी से पागल होकर चीखता है ।" अपने चारों ओर एक किस्म की सभ्यता को देखकर वह चकाचौंध भरी आलीशान सभ्यता बस गयी थी मेरे चारों तरफ । विस्मित, विस्फारित, मैं अपने चारों और आसमानों तक अकड़ी, सितारों को ढाँपती हुई ईमारतों को देखता ही रह गया । शहरों में लोग सभ्य बनने के चक्कर में जीवन का आनंद लेना भूल जाते हैं । गाँवों में रहन-सहन अलग होता है । वहाँ लोग एक-दूसरे की मदद के लिए तैयार रहते हैं । सब एक-दूसरे के सुख-दुःख में शरीक होते हैं । परंतु शहरों में यह नहीं देखा जाता । शहरों में आपके बगल वाली इमारत में कौन रहता है यह भी आप जानते नहीं हो तो सुख-दुख में शरीक होने की बात ही क्या ? शहरी जीवन में पाश्चात्य सभ्यता का इतना असर हो गया है कि मनुष्य यहाँ संवेदनाहीन होता जा रहा है । उसने अपने जीवन को सभ्य और व्यस्त बनाने के चक्कर में अपनी भारतीय संस्कृति, सभ्यता को ही भूला दिया है ।

सूर्यबाला की कहानी 'दादी और रिमोट' में दादी जब गाँव से शहर आती हैं तब देखती हैं कि इन शहरों के बीच खुले आसमान के दर्शन करना दुभर हो गया है । उनके घर के पुरबवाली खिड़की भी बलिश्त-भर आसमान का टुकड़ा दिखाई देता है । खिड़की में से केवल दो-चार तारे ही दिखाई देते हैं । इन शहरी लोगों की जीवन शैली के विषय में लेखिका लिखती हैं - "और सवेरा? जैसे जंग छिड़ी हो कहीं । बोर हुई नहीं की भागमभाग चालू । अदाक-फड़ाक खुलते बंद होते दरवाजे । जूते-चप्पल, कंघी, इस्त्री, अफड़ा-तफड़ी । और अपने-अपने थैले, बकसियाँ लटकाए सब दरवाजे से बाहर ।" इस तरह शहरों में दंगों , आतंकवाद, खून, चोरी, डकैती के वक्त डर का माहौल होता है ।

सूर्यबाला की कहानियों में शहरी जीवन शैली में शहरों में रहकर लोगों को बहुत-सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है । जैसे घर की समस्या, नौकरी की समस्या, रोजगार की समस्या, आतंकवाद की समस्या, बाल मजदूरों की समस्या, वृद्धों की समस्या जाति-पाति की समस्या, सांप्रदायिकता की समस्या

आदि समस्या के मूल में महानगरीय जीवन की मानव मन में लालसा ही है जो उसे शहरी जीवन जीने के लिए मजबूर करती है । सूर्यबाला ने अपनी कहानियों के माध्यम से महानगरीय जीवन की समस्याओं का चित्रण सुसंगत रुप से किया है।

6.12.8 युवाओं की मानसिक समस्या :

आज के युग में युवा लोग अपने भविष्य को लेकर चिंतित रहते हैं । उनका उद्देश्य मात्र शिक्षा प्राप्त करके रोजगार प्राप्त करना नहीं है बल्कि आज का युवा बहुत ही महत्वाकांक्षी हो गया है । वह अपने परिवार को एक अच्छा जीवन देने की लालसा करता है और इसके लिए आज के युवा उच्च शिक्षा प्राप्त कर भारत में ही निवास करना नहीं चाहते बल्कि वह विदेश जाकर अपने सपने पुरा करना चाहते हैं और विदेशों में जाकर अपने देश की संस्कृति और सभ्यता को याद करते हैं और वहाँ की और यहाँ की सभ्यता और संस्कृति मानसिकता में उन्हें अंतर नजर आ जाता है ।

सूर्यबाला का 'गुजरती हदें' कहानी का नायक अपनी विदेशी पत्नि एलिस को तलाक देकर अपने देश भारत लौट आता है । संगठित परिवार में रहते हुए बी वह अपने आपको अकेला महसूस करता है । वह अपने जीवन और घर की परेशानियों से तंग आ जाता है और वह फिर अमेरिका लौट जाना चाहता है । यह मानसिकता आज के युवाओं में हमें देखने को मिलती है । आज भारत के उच्च शिक्षित युवाओं को उनकी शिक्षा के आधार पर नौकरी नहीं मिल पाती जिसके कारण हताश और निराश होकर वे विदेशों में जाकर वहाँ की संस्कृति, सभ्यता को अपना लेते हैं और बाद में जब लौटते हैं तो उनकी मानसिकता में यहाँ के रीति-रिवाज, रहन-सहन उन्हें रास नहीं आते तो फिर हमेशा के लिए लौट जाते हैं। इस कहानी में नायक की द्विविचारधारा का और दोहरी मानसिकता का परिचय मिलता है ।

इसी बात को लेखिका ने अपनी कहानी 'मानुष गंध' में भी दर्शाया है । विदेश से डॉक्टरी की पढ़ाई करके आने के बाद यहाँ भारत में उसको उसकी योग्यता के आधार पर नौकरी प्राप्त करने में व्यवधान आते हैं और इससे निराश होकर फिर से विदेश जाने का फैसला कर लेता है । सूर्यबाला कहती है कि कुछ लोग न चाहते हुए भी विदेश चले जाते हैं क्योंकि उनको यहाँ अनुकूल परिस्थिति उपलब्ध नहीं हो पाती जिससे मानसिक रुप से टुटकर यह फैसला लेने के लिए मजबूर हो जाते हैं । 'दिशाहिन' कहानी में पाश्चात्य संस्कृति में के अनुकरण से कैसे भारत का युवा वर्ग दिशाहीन हो जाता है इस पर लेखिका ने व्यंग्य किया है । आज के युवा लोग विदेश रहन-सहन, उनके जैसा खाना-पीना, उनके जैसी सभ्यता का पालन करके उनका अंधा अनुकरण करने में लगे हे हैं । ऐसा करते समय वे भारत की सभ्यता और संस्कृति को पीछे छोड़ देते हैं ।

पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करके आज की युवा पीढ़ी अपने आपको गौरवान्वित महसूस करती है । 'सुम्मी की बात' कहानी में पूरा परिवार साथ होने के बाद भी अपने आप को अकेला महसूस करते हैं ऐसी मानसिक स्थित बन गई है । योद्धा कहानी में अपने छोटे भाई की मृत्यु के द्वारा महान बन जाता है । बड़ा भाई किन यातनाओं से पसार होता है उसकी कोई परवाह नहीं करता है ।

महानगरीय जीवनशैली, एकलता भरा जीवन, उच्च शिक्षा के बाद विदेश में नौकरी की लालसा, जीवन में उच्च पद प्राप्त करने की होड़, समाज में रुतबा बनाने के लिए तता पारिवारिक समस्याओं के कारण मनुष्य मानसिक अवसाद में डूब जाता है, जिससे निकलना मुश्किल हो जाता है । सूर्यबाला ने अपनी कहानियों के माध्यम से आज की युवा पीढ़ी की मानसिक स्थिति का मनौवैज्ञानिक धरातल पर यथार्थ वर्णन किया है जो पाठकों को बाँधे रखता है ।

6.12.9 समाज में बच्चों की समस्या :

बच्चों का हृदय बड़ा नाजुक और कोमल होता है । उनके स्वभाव में एक आकर्षण, संवेदनशीलता होती है । सूर्यबाला ने अपना पदार्पण बाल साहित्य में

अपनी रचनाएँ प्रस्तुत करके कर ही दिया है । सूर्यबाला ने बाल साहित्य की रचना करते समय समाज में बच्चों की मानसिकता, उनकी समस्याओं को भी अपने बाल साहित्य के आधार पर चित्रण किया है । 'मेरा विद्रोह' कहानी में बेटा अपने पिता का हमेशा विरोध करता है परंतु जब उसके पिता की आँखों में आँसू आते हैं तब उसका भी मन विलाप करता हुआ कहता है "पिताजी, मैं संधि चाहता हूँ ।" आज आधुनिक युग में हर माता-पिता अपने बच्चे की परवरिश इस प्रकार से करना चाहते हैं कि उनके बच्चे की सारी इच्छाएँ, आकांक्षाएँ पूर्ण हों, उन्हें किसी भी चीज की कमी महसूस न हो । पर इस चक्कर में कई बार माता-पिता अपने बच्चों की इच्छाओं, आकांक्षाओं की बलि भी चढ़ा देते हैं और उन्हं बिना सोचे-समझे प्रतियोगिता में उतार देते हैं। उनके द्वारा बच्चों पर इतना दबाव डाला जाता है कि बच्चा थककर विद्रोह कर लेता है । 'सिन्ड्रेला का स्वप्न' में लेखिका ने एक कामवाली लड़की की मानसिकता का यथार्थ वर्णन किया है । उसकी महत्त्वाकांक्षाओं, स्वप्नों को दर्शाया है । इस कहानी में हम उच्च वर्ग के द्वारा निमन वर्ग के बच्चे और काम करने वाले का किस प्रकार शोषण किया जाता है । इसमें उच्च वर्ग की महिला कम वेतन में ही अपने घर का काम करवा लेती है और वह लड़की सिन्ड्रेला की कहानी सुनने के बाद लड़की अपने आप को सिन्ड्रेला समझती है । जैसे सिन्ड्रेला के जीवन में दुःख और गरीबी है उसी प्रकार लड़की का जीवन है । वह अपने आप को सिन्ड्रेला से जोड़कर देखती है । 'तोहफा' कहानी में एक पिता अपने बेटे के जन्मदिन पर भी अपने बच्चे को साहब की वजह से चाँटा मार देता है पर उसकी इच्छा पूर्ण नहीं करता । सारे मेहमान आखिर थककर चले जाते हैं । पूरे जन्मदिन के माहौल को बिगाड़ दिया जाता है । साहब की आवभगत के चक्कर में एक पिता का अपने बेटे के प्रति क्या कर्तव्य है वह भी वह भूल जाता है । 'जेब्रा' कहानी का जेब्रा का पात्र संवेदनशील है । बाल मजदूरी की समस्या को जेब्रा कहानी में दर्शाया गया है । फिर भी बाल मजदूरी का शिकार हुआ जेब्रा अपने पिता के प्रति उद्दम है । 'जेब्रा' की यह

कहानी बड़ी ही मार्मिक औऱ संवेदनशील है । 'एक लॉन की जबानी' यह एक महानगरीय जीवन जीने वाली आयाओं की कहानी है जो छोटे-छोटे बाबुओं को लेकर लॉन पर खेलने-टहलने के लिए आती हैं और इसी लॉन पर बचपन में ही उन नन्हें बच्चों में सभ्यता, संस्कृति और ऊँच-नीच की भावना को जागृत किया जाता है । बच्चों से उनका बचपन छिनकर उन्हें सभ्यता के नाम पर पाश्चात्य संस्कृति से जोड़ा जाता है । एक अमीर बच्चे का व्यवहार एक गरीब के साथ कैसा होना चाहिए इस बात की ट्रेनिंग उन्हें बचपन में ही दी जाती है ।

अंतरंग' कहानी में बाल मजदूरी करने वाली बच्ची का शिक्षित और सभ्य समाज के द्वारा कैसे उसका शोषण किया जाता है उसे दर्शाया है । 'माय नेम इज़ तात' की बच्ची अपनी माँ और आया दोनों के प्रति अपनी उदासीनता को दर्शाती है जो एक छोटी लड़की की मनोवैज्ञानिक स्थिति को दर्शाता है । उस लड़की को जो अपनापन, लगाव, अपनी दादी में दिखाई देता है वह प्यार-दुलार वह अपनी माँ या आया में नहीं पाती । इन सारी कहानियों में सूर्यबाला ने मनोवैज्ञानिक ढंग से बच्चों की मानसिक अवस्था, सोच-विचार, व्यवहार का चित्रण किया है । सूर्यबाला की ऐसी कहानियाँ संवेदनाओं से भरी हुई दिखती हैं ।

ऐसी ही कहानी है 'सुनंदा छोकरी की डायरी' में लड़की स्कूल जाती है । उसकी आँखों में आने वाले कल के सपने हैं । लेकिन जब उसके पिताजी की नौकरी छूट जाती है तब लड़की को स्कूल जाना छोड़ना पड़ता है । स्कूल छुटने के बाद उसे काम करना पड़ता है और फिर उसका पिता शराबी हो जाता है तथा घर में शराब पीकर रोज लड़की की माँ को प्रताड़ित करता है । फिर जली हुई माँ को अस्पताल लेकर जाते हैं और पिता को पुलिस पकड़कर ले जाती है । इससे सुनंदा और दो बच्चों के सर से माँ-बाप का साया उठ जाता है। बाल मजदूरी बच्चों को समय से पहले ही बड़ा-बुढ़ा बना देती है । गाँव से शहर मे रोजी-रोटी के लिए आने वाले लोग शहरों में बच्चों को ज्यादा आर्थिक आय कमाने के लिए

उनका बचपन छिनकर उन्हें होटेल, गैराज में सस्ते नौकर के रूप में काम पर लगा देते हैं । वे अपने समय से पूर्व ही संवेदनशील और जिम्मेदार हो जाते हैं ।

'मटियाला तीतर' यह एक अत्यंत संवेदनशील कहानी के रुप में लेखिका ने प्रस्तुत किया है । हम देखते हैं कि शहरों में गैराजों में, फेक्टरियों में, छोटे-मोटे औद्योगिक धंधों में, रेस्तराँ में बच्चों की अधिक माँग होती है क्योंकि बच्चे कम मजदूरी में मिल जाते हैं । उन्हें डरा कर, बहलाकर, उनको लालच देकर काम करवा लिया जाता है । उनकी गरीबी का फायदा उठाया जाता है । बालकों का मन अत्यंत कोमल और संवेदनशील होता है । उन्हें बचपन में ही जिम्मेदारियों के बोझ तले दबा देते हैं, मानसिक और शारीरिक और सामाजिक रुप से ऐसे बच्चे जल्दी बड़े हो जाते हैं । इसी बात का लाभ हमारा उच्च वर्ग का समाज उठाता है क्योंकि बाल मजदूरी सस्ते में करवाई जा सकती है । हमारे समाज के शिक्षित और सभ्य लोग ही इनका अधिक शोषण करते हैं ऐसा कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । अपने स्वार्थ को साधने के लिए समाज में बालमजदूरों का उपयोग हम हर क्षेत्र में देख सकते हैं ।

'गौरा गुनवंती' कहानी की गौरा संयुक्त परिवार में अपने लिए स्थान ढूँढती है । उस पर जबरदस्ते थोपे जाने वाले उत्तरदायित्व का निर्वाह न चाहते हुए भी करती है । अपने बचपन को खोकर समय से पूर्व ही गौरा बड़ी हो जाती है । वह संवाद करते हुए कहती है "शायद मैं दूसरों से ज्यादा स्वयं पर बोझ बन गयी थी । अहसानों का बोझ चारों ओर से घेरती, समेटती, बेचारगी भरी निगाहों का बोझ ।" गौरा की इस अवस्था कारण यह है कि वह अनाथ और गरीब है जिसके कारण उसको सबके बोझ के तले दबने के कारण कुछ बोला नहीं जाता है । 'कपड़े' कहानी में लड़के को चोर का बेटा कहकर काम से निकाल दिया जाता है । गरीबी के कारण ही वह बाल मजदूरी करने के लिए मजबूर है । उस पर चोरी का इल्ज़ाम लगाकर उस पर अन्याय किया जाता है । 'नीली थैली वाला पैराशुट' कहानी दो वर्गों की कहानी है । एक उच्च वर्ग है तो दूसरा गरीब वर्ग है । साधन

संपन्न होकर भी, सारे खिलौने होने पर भी तान्या को एक गरीब अधनंगा बच्चा आकाश में जो खिलौना उड़ा रहा था वह पसंद आ जाता है और तान्या किसी भी कीमत पर उस खिलौने को प्राप्त करना चाहती है । वह उस खिलौने पर जोर जबरदस्ती से अपना पाँव रख देती है और उस गरीब का एक मात्र खिलौना कुचल देती है और इस बात से गुस्सा होकर लड़का उस पर रेत डालकर भाग जाता है । प्रस्तुत कहानी मे तान्या की स्वार्थी मनोवृत्ति का परिचय मिलता है । सूर्यबाला द्वारा रचित अधिकांश कहानियों में उच्च, शिक्षित, साधन-संपन्न परिवारों द्वारा गरीब, परिस्थिति से मजबूर बच्चों का शोषण किया जाता है ऐसा चित्रण किया गया है जो कुछ हद तक हमारे समाज में बच्चों की यथार्थ और अत्यंत संवेदनशील मुद्दे पर अपनी लेखनी चलाई है ।

आज भी सरकार ने छोटे बच्चों के लिए मुफ्त शिक्षा, भोजन, स्वास्थ्य, बाल मजदूरी विरोधी कानून, शोषण के खिलाफ कानून बनाए हैं जिससे कुछ हद तक इस पर नियंत्रण पाया गया है । परंतु आज भी कई जगहों पर हम ऐसे ही बच्चों को अपना बचपन खोता देख सकते हैं । जो आने वाले समय में देश की प्रगति में एक बाधा स्वरुप कारण है ।

6.12.10 मानव शोषण की समस्या:

आज के आधुनिक युग में मनुष्य की मनोवृत्ति स्वार्थ, दंभ, शोषण आदि से भरी हुई हो गई है । अपना काम निकलवा ने के लिए आज का मनुष्य किसी भी हद तक नीचे गिरने के लिए तैयार हो जाता है । मनुष्य जाति में मानवता का अत्यंत संवेदनशील गुण खत्म-सा हो गया है । आज मानव संवेदनहीन बनकर मानव का ही शोषण करता दिखाई दे रहा है ।

हमारे समाज का शोषक वर्ग, गरीब मजबूर वर्ग का आदिकाल से अपने स्वार्थ के लिए शोषण करता आया है । केवल आज समाज में शोषण का रुप बदल गया है । सूर्यबाला द्वारा रचित कहानियाँ 'सिन्ड्रेला का स्वप्न', 'अंतरंग', 'जेब्रा' आदि में मानव शोषण की समस्या को अति संवेदनशील तरीके से चित्रित

किया गया है । उच्च वर्ग अपने लाभ के लिए बच्चों तक को बालमजदूरी करवाता है और उनकी मजबूरी का जमकर फायदा उठाकर उनका शोषण करता है ।

'गीता चौधरी का आखरी सवाल' कहानी में गीता का उसके परिवार वाले ही शोषण करते हैं इसका चित्रण किया गया है । शिक्षा के क्षेत्र में इतना ज्ञान देने के बावजूद भी इन परिस्थितियों में कोई बदलाव नहीं आया है । आज भी हमारे समाज में लड़का-लड़की में भेदभाव किया जाता है । लड़के को पढ़ाया जाता है और लड़की को पढ़ाई से वंचित रखा जाता है । यह एक प्रकार का जातिगत शोषण ही है । यहाँ पर माता-पिता स्वयं अन्याय और शोषण का माध्यम बन जाते हैं । थोड़ा बहुत तो लड़की को पढ़ाते हैं परंतु फिर उसकी शादी करवाकर उससे मुक्ति पाई जाती है । अपनी जिम्मेदारी से दूर भागा जाता है । परिवार वाले सदस्यों के द्वारा यही व्यवहार अपने घर की बेटी के साथ किया जाता है ।

केवल हमारे समाज में बच्चों का ही नहीं अपितु बड़े-बुढ़े, स्त्रियों का, पुरुषों का भी समान रुप से किसी न किसी रुप में शोषण किया जाता है । 'विजेता' कहानी में शोषक वर्ग और जिसका शोषण हो रहा है उन दोनों वर्गों का चित्रण किया गया है । सूर्यबाला की कहानी 'खुशहाल' में कंपनी में हो रहे मजदूरों के शोषण की समस्या को उजागर किया गया है । कहानी का पात्र नौकरी से निकाल दिये जाने पर डर के कारण सुपरवाइज़र का चाटा खाकर भी चूप रहता है और अपना आक्रोश प्रकट नहीं करता । उसे इस बात का भय है कि कहीं उसे काम से निकाल न दिया जाए । उसके सामने उसके परिवार का चित्र तैरने लगता है ।

'रहमदिल' कहानी में रेलयात्रा के दौरान टी.सी. द्वारा किया जाने वाला यात्री का शोषण । रहमत अली समझता है कि टी.सी. उस पर एहसान कर रहा है परंतु असल में वह उसकी अज्ञानता का फायदा उठाता है । अज्ञानी मनुष्य का ज्ञानी मनुष्य जमकर फायदा उठाता है । यह समस्या सूर्यबाला ने अपनी कहानी में उठाई है । रहमत अली के माध्यम से लेखिका अपने विचार प्रकट करती हैं । "एक बार आठ घंटे लाइन में खड़े होकर रिज़र्व टिकट लिया था, फिर भी ट्रेन में

जाने क्यों टिकट वापस बना । वैसे टिकट बाबू नेकदिल था, जो बीस-बीस रुपये में सीट पक्की कर दी । असगरी बेटी के दस लिए । दो असगरी की सीट कहा, लेकिन टिकट बाबू ने समझाया कि भाई मेरे, डिब्बे में सफ़र तो कर ही रहे हैं ना! अरे बच्चों का बस नाम ही सब कुछ तो बड़े जैसे ही बरतते हैं बच्चे! यह सब कायदे-कानून की बातें एक किनारे कोने में ले जाकर समझाया टिकट बाबू ने और पचास का नोट सरकाकर कहा कि भइए, यह टिकट कच्चा था, अब पक्का बना ।"[18]

कहीं न कहीं पर मानव का शोषण किसी न किसी रुप में हो रहा है । महिलाओं का शोषण कार्यस्थल से लेकर परिवारों तक में होता है । आज महिलाओं की सुरक्षा को लेकर सरकार ने कई कानून बनाए हैं । कई अधिकार प्रदान किये हैं परंतु महिलाओं का शोषण प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप में भी हो सकता है । अगर महिलायें अपने अधिकारों का, अपने कानून का अच्छे से अध्ययन करें तो वे ऐसे हो रहे शोषण या अन्याय के सामने लड़ सकती हैं तथा अपने अधिकारों का उपयोग अपने स्वयं के बचाव के लिए कर सकती है । परंतु समाज में कुछ ऐसी भी महिलाएँ हैं जो अन्याय, अत्याचार, शोषण को चुचपाच मुकबधिर बनकर सहन करती हैं तथा उसे संस्कृति, परंपरा का नाम देकर दबा देती हैं । पर एक ऊफ तक नहीं करती । 'सीखचों के आरपार' कहानी में ऐसी ही महिलाओं का चित्रण किया गया है ।

आज की महिला पढ़ी-लिखी है, जागृत है । उसे सरकार के द्वारा कई कानूनी अधिकार दिये गये हैं । वह अपने लिए मुक्त विचारों से सोच सकती है । अपना निर्णय खुद ले सकती है । परंतु इतना कुछ होने पर भी हम आये दिन महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों, शोषण, दहेज के लिए प्रताड़ना, हत्या, बलात्कार, ब्लेकमेइल आदि के द्वारा महिलाओं का शारीरिक और मानसिक रुप से शोषण होता देख रहे हैं ।

सूर्यबाला ने अपनी कहानियों के माध्यम से मनुष्य का हो रहा शोषण पात्रों, प्रसंगों, घटनाओं, संवादों के माध्यम से प्रस्तुत किया है जो यतार्थ के धरातल पर सटीक ठहरता है और पाठकों को इन समस्याओं को जानने का एक मंच प्रदान करता है ।

6.12.11 मूल्य विघटन की समस्या :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है । उसके लिए जीवन में मूल्यों का आधार महत्त्वपूर्ण है। मूल्यों का संयोजन मानव जाति अपनी पीढ़ियों से बचपन से ही करती आती है जिसे हम संस्कार, सभ्यता कहते हैं । नीति-नियम, दया, ममता, त्याग-बलिदान, आस्था-श्रद्धा, सत्य, ईमानदारी आदि मूल्यों का सिंचन किया जाता है पर आज के आधुनिक युग में मानव स्वार्थ-केन्द्री हो गया है और इससे मानवीय मूल्यों का कहीं पतन या विघटन हो रहा है । जिन मूल्यों को हमारी पीढ़ियों ने हमारे मानव जाति में पल्लवित किया उसका आज इस तरह ह्रास हो रहा है ।

सूर्यबाला ने अपनी कहानियो में मानवीय मूल्यों के विघटन की समस्याओं को भी प्रकाशित किया है ।

6.12.1.1 नैतिकता का मूल्य : जैसे-जैसे समाज प्रगति करता जा रहा है, तेजी से मनुष्य का नैतिक मूल्य का पतन होता जा रहा है । मनुष्य स्वार्थी हो गया है और उसके इसी स्वार्थ के कारण वह अपने चरित्र का हनन कर रहा है । आज जो हम भ्रष्टाचार देखते हैं यह इसी के कारण हो रहा है । सूर्यबाला की कहानी 'रहमदिल' में इसका उदाहरण देख सकते हैं । कैसे टी.सी. अशिक्षित यात्री को बेवकूफ बनाकर अपना पैसा बना लेता है और यात्रा का आशीर्वाद भी फ्री में ले लेता है । आज अशिक्षा और जानकारी के अभाव में लोगों को आर्थिक रुप से लूट लिया जाता है । इसलिए हम कह सकते हैं कि नैतिक मूल्यों का कहीं पतन हो रहा है । 'तोहफा' कहानी में नायक अपने शराबी बॉस को मनाने के लिए अपने बेटे की सालगिरह पर उसे तमाचा मारने से भी पीछे नहीं हटता और अपनी नैतिक जिम्मेदारी भूल जाता है । 'पराजित' कहानी में दूसरों का प्रमोशन देखकर

बंसल अपनी पत्नी को भी अन्य पत्नियों की तरह अनैतिक संबंध के लिए कहता है। वहाँ पर बंसल की नैतिकता बिलकुल नीचले स्तर पर गिर जाती है और वह केवल अपने स्वार्थ को महत्त्व देता है ।

एक मनुष्य को अपनी इज्जत बहुत प्यारी होती है । समाज के उच्च वर्ग और अन्य लोगों को अपनी इज्जत का बड़ा ख्याल होता है । आज के जमाने में तेजी से नैतिक मूल्यों का पतन हो रहा है । सूर्यबाला की कहानी 'सुनंदा छोकरी की डायरी' में सुनंदा झूठ बोलती है या चोरी करती है तो उसे डाँट लगाते हुए समझाती है कि आगे से वह ऐसा कार्य न करे । ऐसे ही छोटे बच्चों में संस्कारों को पोषण किया जात सकता है ।

6.12.11.2 त्याग की भावना: हमारे इतिहास में त्याग की भावना का महत्त्व अलग ही है । 'संताप' कहानी का माध्यम से सूर्यबाला ने एक अपाहिज बच्ची अपने भाई को बचाने के लिए अपने प्राणों का त्याग दे देती है । परंतु वहीं उसका पिता है जो उन दोनों को डूबता देख बचाने की भी कोशिश नहीं करता । उसमें पिता होते हुए भी त्याग और पितृत्व की भावना नहीं है । वह केवल एक स्वार्थी पिता बनकर रह जाता है ।

6.12.11.3 आस्था की भावना : सूर्यबाला की कहानी 'राख' में आस्था की भावना को लेकर प्रश्न खड़ा हो गया है । हमारी संस्कृति में मंदिरों, मस्जिदों, देवालयों पर लोगों को बड़ा विश्वास, बड़ी श्रद्धा हुआ करती थी । परंतु आज ये स्थल भेंट सौगात आदि लेने से परहेज नहीं करते । यहाँ पर जो भक्त आते हैं वे केवल अपने मन में आस्था के कारण नहीं आते बल्कि उनके मन में एक स्वार्थ होता है और उसे पूरा करने के लिए लंबी-लंबी कतारें लगाई जाती हैं । यही बात सूर्यबाला ने 'हनुमान गढ़ी' में की है जहाँ पहले बाबाजी के समय मंदिर का माहौल भक्तिमय था परंतु बाद में शिष्यों और बाबाजी के बीच विखवाद होते ही परिस्थितियाँ बदल जाती हैं और श्रद्धास्थली अब विवादों का अखाड़ा बन जाता है।

सूर्यबाला की कहानी 'गौरा गुणवंती' में गौरा के आस्था और विश्वास ही जीवन जीने की प्रेरणा बन जाती है । सूर्यबाला की आस्था का विषय विश्वास से जुड़ा है परंतु आज का मनुष्य हर चीज तेज गति से प्राप्त करना चाहता है । और इसके कारण वह अपना धैर्य और आस्था ईश्वर के प्रति खोता जा रहा है ।

आज के आधुनिक युग में कहानी ही एक मात्र ऐसी विधा है जिसका पाठकों के द्वारा अधिक मात्रा में पठन किया जाता है और कहानी ही एक ऐसी विधा है जिसके माध्यम से एक कहानीकार समाज में फैली विसंगतियों, असंतोष, सामाजिक मूल्यों के विघटन, सामाजिक स्तर पर, पारिवारिक स्तर पर, राजनैतिक स्तर पर, धार्मिक स्तर पर, मानसिक स्तर पर देश के विकास में बाधा समान ऐसी अनेक समस्याएँ होती हैं जो मनुष्य के जीवन पर, समाज पर, देश पर, इसका अदृश्य या दृश्य स्वरुप में असर होता है । और ऐसी ही समस्याओं को एक प्रखर लेखक अपनी कहानियों के माध्यम से समाज में बदलाव लाने की अपेक्षा रखते हुए कहानियों की रचना करता है ताकि ये कहानियाँ समाज में पूरा तो नहीं पर कुछ स्तरों पर जाकर, मानव, समाज, देश में बदलाव की लहर ला सकें और सूर्यबाला ने भी अपनी कहानियों के माध्यम से कई समस्याओं को उजागर करने का सफल प्रयास किया है।

6.13 व्यंग्य साहित्य में निरुपित समस्याएँ :

सूर्यबाला ने व्यंग्य साहित्य की रचना की जिसके माध्यम से अन्य व्यंग्य रचनाकारों की तरह वर्गहीन समाज की स्थापना करना चाहती है । वह असंगतियों को दूर करना चाहती हैं । लेखिका का मुख्य उद्देश्य समाज सुधार और परिवर्तन लाना है ।

सूर्यबाला ने अपने व्यंग्य बाणों के लिए राजनीति की अपेक्षा सामाजिक परिवेश को अधिक पसंद किया है । पर ऐसा नहीं कि उन्होंने राजनीति के संबंध में लिखा नहीं है । उनकी ऐसी भी व्यंग्य रचनाएँ हैं जिसमें राजनीति पर भी वह व्यंग्य कसती नज़र आती हैं । जैसे 'दल निर्माण की पूर्व संध्या पर', 'सिकर हो गई

राजनीति' जैसी व्यंग्य रचनाएँ इस विधा में लिखी हैं । सूर्यबाला मुख्य रुप से एक कहानीकार और उपन्यासकार हैं परंतु उनकी अपनी एक विशिष्ट शैली है । उन्होंने अपने व्यंग्य में एक रोष के भाव के साथ-साथ हास्य भी निर्माण किया है और अपनी बातों को व्यंग्य शैली में बेबाक रुप से बिना किसी भय के अपना मत प्रस्तुत किया है जिसके कारण सूर्यबाला एक उत्कृष्ट व्यंग्यकार के रुप में उभकर हमारे सामने आती हैं ।

"सूर्यबाला के व्यंग्यों में कला और साहित्य, फिल्म और संस्कृति, देशसेवा और जननेता, पत्रकार और बुद्धिजीवी आदि की व्यापक परिक्रमा के आधार पर हिंदी के व्यंग्य लेखन का एक प्रतिमानक जायका उपलब्ध है । ये व्यंग्य रचनाएँ सूर्यबाला की व्यंग्य-दृष्टि और सर्जन के प्रति स्थायी तौर पर आश्वस्त करती हैं ।" - बालेन्दु शिखर तिवारी

अपने व्यंग्य साहित्य में सूर्यबाला ने अपने व्यंग्य बाणों के जरिए कई समस्याओं पर प्रकाश डाला है और अपने रोचक अंदाज में हास्य निर्मित करके व्यंग्य किया है । जो सामान्य जनमानस को आसानी से समझ में आ जाए । सूर्यबाला ने अपनी व्यंग्य रचनाओं में कई समस्याओं का उल्लेख किया है जिसमें भ्रष्टाचार की समस्या, आतंकवाद की समस्या, गरीबी की समस्या, भूखमरी की समस्या, बाढ़ की समस्या, बेरोजगारी की समस्या, बलात्कार की समस्या, विदेश पलायन की समस्या, स्त्री शोषण की समस्या, राजनीतिक समस्या, दंगों की समस्या, हिंदी लेखकों की समस्या, हिंदी भाषा की समस्या आदि का उल्लेख किया है । सर्वप्रथम हम भ्रष्टाचार की समस्या को देखेंगे ।

6.13.1 भ्रष्टाचार की समस्या :

भ्रष्टाचार का अर्थ है भ्रष्ट आचरण । ऐसा कार्य करना जो अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए किया गया हो । समाज के नैतिक मूल्यों की परवाह किये बिना किया गया कार्य भ्रष्टाचार कहलाता है । भारत ही इसे इस समस्या का शिकार नहीं है, यह समस्या देश-विदेशों तक पहुँची है । भ्रष्टाचार के लिए हमारा

समाज ज्यादातर राजनेताओं, उच्च अधिकारियों, बड़े-बड़े पद पर बैठे यजमानों को इसका दोषी मानता है । पर देश का आम आदमी भी भ्रष्टाचार के विभिन्न स्वरुप में भागीदार होता है । वर्तमान में भ्रष्टाचार की समस्या किसी भी क्षेत्र में पाई जा सकती है । अवैध तरीकों से धन अर्जित करना भ्रष्टाचार है । अपने निजी लाभ को ध्यान में रखकर देश की संपत्ति को अनैतिक तरीके से पाना भ्रष्टाचार है।

सूर्यबाला ने अपनी व्यंग्य रचनाओं में इस समस्या को लेकर तँज कसते हुए व्यंग्य किया है । उनकी व्यंग्य रचना 'बड़े बाबू बिलॉक साहब बनाम तैयारी महबूब के आने की' में इस समस्या के संदर्भ में व्यंग्य किया है । जब इंस्पेक्शन के लिए अधिकारी आने वाले होते हैं तब बड़े बाबू जाँच समिति का पूरा जिम्मा संभालते हैं । उनके आने से पूर्व ही चिकन, मक्खनी और रस मलाई का ऑर्डर दे दिया जाता है । अस्पताल में फर्जीवाड़ा करके ही बहुत सारी दौलत बड़े बाबू कमा लेते हैं । दवाईयों, औज़ारों, ब्रुम, कंबल-गद्दे-तंबू-तकिए, फिनाइल, आदि में पैसा कमा लिया जाता है और अपना यह दुर्गुण अपने बच्चे तक को सिखाता है ।

'रचनात्मक आयामों से बचते-बचते' में भी सूर्यबाला ने भ्रष्टाचार का उल्लेख किया है। जब हम अखबार, समाचार पत्र पढ़ते हैं तो उस समाचार पत्र में रोज के स्केण्डलों, भ्रष्टाचार का विवरण लिखा होता है, जो हमारे मन को विचलित कर देता है । भ्रष्टाचार की खबरों की समाचार पत्रों में होड़ लगी रहती है । 'रिटायरनामा' में लेखिका कहती हैं जब उनके पति रिटायर हो जाते हैं और घर पर ही रहते हैं तब वह जब अपने मित्रों को अपने घर पर बुलाते हैं तब बातों ही बातों में यह बता देते हैं कि उन्होंने कहाँ-कहाँ और कब अपने ऑफिस में स्कैण्डल यानी भ्रष्टाचार किया है और बड़े मजे ले-लेकर वह यह बातें अपने मित्रों के साथ मुक्त हृदय से व्यक्त करते हैं ।

सूर्यबाला ने अपनी व्यंग्य रचनाओं में भ्रष्टाचार के खिलाफ व्यंग्यात्मक शैली को अपनाते हुए समाज के बड़े-बड़े ओहदे पर बैठे लोग, अस्पताल में कार्य करने वाले, हिन्दी साहित्य में कार्य करने वाले, पुरस्कार वितरण समितियाँ, रेल्वे, किसी

ऑफिस से अपना कार्य निकलवाना हो तो भ्रष्टाचार जैसे राक्षस की आवश्यकता होती है । इसके बिना तो एक पग भी आगे बढ़ा नहीं जा सकता । इसी समस्या को अपने व्यंग्य के माध्यम से समाज में नयी सोच लाने का प्रयत्न किया है ।

6.13.2 राजनैतिक समस्या :

भारतीय लोकतांत्रिक देश में अनेकों राजनीतिक पार्टियों के होने के बावजूद कई सारी समस्याएँ सामने आती हैं जो हमारे देश के लिए बड़े दुःख की बात है, जो हमारे देश के विकास और प्रगति में बाधारुप बन जाता है । पहला मुख्य कारण है राजनीति में भ्रष्टाचार, दूसरा चुनावों से पहले जो राजनेता बड़े ही विनम्रता से पेश आते हैं, लोगों से नीतियों और तरक्की के वादों की बौछार करते हैं वही राजनेता चुनाव जीतने के बाद गायब हो जाते हैं । आम लोगों की समस्याओं की परवाह तक नहीं करते । आम जनता के बीच पैसा बाँटकर वोट खरीदे जाते हैं । सत्ता पर बैठा राजनेता किसी भी कीमत पर सत्ता हथियाना चाहता है । दूसरी समस्या राजनीति में दलबदली की देखने को मिलती है । राजनीतिक दलों में लोकतंत्र का अभाव देखने को मिलता है ।

सूर्यबाला द्वारा रचित व्यंग्य रचनाओं में हम राजनीतिक समस्याओं को देख सकते हैं। 'यह देश और सोनिया गाँधी', 'देश सेवा की तालमेल', 'भगवान ने कहा था', 'देश सेवा के अखाड़े में' आदि रचनाओं में हम राजनीति समस्याओं से अवगत होते हैं । 'यह देश और सोनिया गाँधी' में सोनिया गाँधी के पास देश का हर मंत्री सलाह लेने जाता है और उनसे पूछकर ही सारे देश के कार्यों की रुपरेखा बनाई जाती है । सब बारी-बारी से सोनिया गाँधी से मिलने जाते हैं । अध्यक्ष पद ग्रहण करने से पूर्व आशीर्वाद लेने, कोई मंत्रीपद छोड़ने के बाद सूचित करने और कौन-सी वाली सीट छोड़कर कौन-सी वाली सीट पर लड़ने जाऊँ यह राय भी सोनिया गाँधी से पूछने के बाद ही तय किया जाता है। हर समस्या का राजनीतिक समाधान सोनिया गाँधी के पास मिलता है । यहाँ इस वाक्य रचना में लेखिका कहना चाहती है कि इस देश का नेता कोई भी निर्णय

अपने बलबूते से नहीं ले सकता । उसे अपने सारे निर्णय लेने के लिए पार्टी के हाईकमान के पास जाना पड़ता है । उसे अपने अधिकार का उपयोग कब, कैसे और कहाँ करना है यह भी उसे उच्च पद पर आसिन अध्यक्ष से पूछना पड़ता है । अर्थात् एक सच्चा नेता अगर कोई हो और उसे समाज के लिए कोई कार्य करना हो तो भी वह हाईकमान के खिलाफ जाकर निर्णय नहीं ले सकता । सारे ऑर्डर वहीं से प्राप्त होते हैं । नेता तो बस हाईकमान की कठपुतली मात्र बनकर रह गये हैं।

दूसरी व्यंग्य रचना 'देश-सेवा की तालमेल' में राजनेताओं को एक पार्टी से दूसरी पार्टी बदलते देखा जा सकता है । वे यह निर्णय जनता के प्रश्नों को छुड़वाने के लिए नहीं अपितु वह इसके पीछे जनता का हवाला देकर अपनी रोटियाँ सेंकना चाहते हैं । जब ऐसे नेताओं से पूछा जाए कि आपने देश के लिए क्या किया तो यह कहते हुए पाये जाते हैं कि हमने शादी की, बाल-बच्चे पैदा किये और इसी देश में बड़े घोटाले करके बाइज्ज़त बरी भी हो गये । वह तो देशसेवा करके देश के लिए मर मिटना चाहते हैं । मरने के लिए या देशसेवा के लिए वह बॉर्डर पर जाकर लड़ना या अत्याचार के विरोध में आत्मदाह करना नहीं चाहते । वे तो केवल मात्र देशहित में अपना बहुमूल्य बलिदान देना चाहते हैं । इसके माध्यम से लेखिका ने राजनेताओं के खिलाफ तंज कसा है ।

'भगवान ने कहा था' वाली व्यंग्य रचना में भी प्रदेश के नवनियुक्त सचिव महोदय जब मंदिर के दर्शनार्थ आने की बात (इच्छा) प्रकट करते हैं तब मंदिर के आस-पास के परिसर की साफ़-सफ़ाई के द्वारा स्वच्छता अभियान चलाया जाता है । मंदिर का कुड़ा-कचरा, अगल-बगल की धुल उड़ाई जाती है । डी.डी.टी. का छिड़काव किया जाता है । मंदिर क भगवान को चमकाया जाता है । मंदिर के प्रांगण को फिनाईल से धोकर स्वच्छ किया जाता है । मंदिर की साज-सज्जा पर विशेष ध्यान दिया जाता है । परंतु जिस दिन मंदिर में नवनियुक्त सचिव महोदय को आरती करनी होती है तो वह आरती के समय पर नहीं पहुँचते इससे मंदिर के

पुजारी भी चिंतित हो जाते हैं । परंतु इतने बड़े पद पर आसिन व्यक्ति के खिलाफ़ एक शब्द भी नहीं उल्टा-सीधा बोल सकते । सब भगवान की इच्छा है कहकर अपना पल्ला झाड़ते हैं । यही हाल समाज में भी होता है । सामान्य जनता उच्च राजनेताओं से होनेवाले अत्याचार या अन्याय के खिलाफ़ कुछ भी बोल पाने में असमर्थ होती है ।

'देश सेवा के अखाड़े में' रचना में सूर्यबाला ने राजनीति में चले आ रहे नेताओं के विषय में जबरदस्त व्यंग्य किया है । जब कोई नेता राजनीति में आता है तब हर कहीं से उसे बधाई के संदेश आना शुरु हो जाते हैं । वह कौन से एरिये से चुनाव लड़ेगा, कहाँ-कहाँ पर अपनी छाप बनायेगा और अब अपने निजी जीवन में क्या-क्या बदलाव की उम्मीद लेकर वो इस अखाड़े में उतरा है यह लेखिका इस व्यंग्य के माध्यम से बताना चाहती है । क्योंकि राजनीति में बहुत स्कॉप है । आपको बड़े-बड़े ऑफर मिल जाते हैं । मुलाकातियों का तो आपके घर ताँता लग जाता है । हर कोई नेताजी से मिलना चाहता है । क्योंकि नेताजी देश की सेवा के लिए अपना कीमती बहुमूल्य जीवन कुर्बान कर रहे हैं । इस कारण से अब उनकी जिंदगी भी सँवर जायेगी अर्थात् देश सेवा तो एक बहाना मात्र है । असल तो काम अपनी सात पुश्तों के लिए कमाई करके जाना है ।

सूर्यबाला ने अपने व्यंग्य साहित्य में राजनीतिक समस्याओं का पूरजोर से विरोध किया है । उनके द्वारा किया गया व्यंग्य राजनेताओं और देश की प्रगति में अवरोध उत्पन्न करने वालों के खिलाफ़ एक खुला विद्रोह है ।

6.13.3 बेरोजगारी की समस्या :

बेरोजगारी हमारे देश के विकास में अवरोध करने वाली प्रमुख समस्याओं में से एक है । शिक्षा के अभाव, रोजगार के अवसर ना मिलने के कारण और कुछ काबिलियत ना होने के कारण यह समस्या उद्भव होती है . रोजगार ना मिलने के कारण देश का युवा शारीरिक और मानसिक रूप से टूट जाता है क्योंकि आज के युग में ढेरों युवा उच्च शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं परंतु रोजगारी या नौकरी न

मिलने के कारण अपने परिवार का पालन-पोषण भी नहीं कर पाते । भारत सरकार को युवाओं को रोजगार मुहैया करवाने के लिए ठोस कदम उठाने पडेंगे वर्ना यह समस्या देश के विकास में एक बड़ी बाधा बन सकती है । इस बात का ध्यान रखते हुए सूर्यबाला ने अपनी व्यंग्य रचनाओं में इस मुद्दे पर गहराई से विचार करने के लिए हमें मजबूर किया है ।

सूर्यबाला की व्यंग्य रचनाएँ 'प्रभुजी, तुम डॉलर हम पानी', 'देश सेवा का तालमेल', 'जन आकांक्षा का टाइटल सॉन्ग' आदि । सूर्यबाला की रचना 'प्रभुजी, तुम डॉलर हम पानी' में भारत देश के युवाओं को रोजगार तो मिल जाता है परंतु उचित आर्थिक वेतन नहीं प्राप्त होता । इस वजह से भारत के इंजीनियर, डॉक्टर्स, नर्स, कम्पाउण्डर आदि अन्य देशों मे जाकर अपना आर्थिक विकास करना चाहते हैं । रोजगार न प्राप्त करने के कारण देश का बौद्धिक ज्ञान अन्य देशों की ओर अग्रसर हो जाता है और हमारा देश इन्हीं कारणों की वजह से अपना विकास नहीं कर पाता। 'देश सेवा की तालमेल' में जो लोग नेता बनते हैं, अपना मेनीफेस्टो बाहर प्रस्तुत करते हैं तब वे लोग देश के युवाओं के वोट प्राप्त करने के लिए उन्हें उचित रोजगार उपलब्ध करवाने के वादे करते हैं, उन्हें भरोसा दिलवाते हैं कि सत्ता में आने के बाद देश में युवाओं की बेरोजगारी की समस्या को जड़ से उखाड़ देंगे । उन्हें अलग-अलग सपने दिखाये जाते हैं । परंतु सत्ता में आने के बाद नेता लोग अपनी निजी आर्थिक समस्याओं का ही समाधान प्राप्त करने में लगे होते हैं । इस तरह रोजगारी देने का प्रस्ताव रखकर देश की भोलीभाली जनता के प्रश्नों का समाधान करने के बजाय नेता लोग सत्ता का खुब आनंद भोगते हैं ।

'जन आकांक्षा का टाइटल सॉन्ग' रचना में देश के कर्णधार खुद आम जनता के बीच जाकर कुछ करना चाहते हैं और इसके लिए वे लोग आदेश देते हैं कि देश के सेवानिवृत्त और बेरोजगार आदि को बुलाया जाए । सबको पास बैठाकर कुशलक्षेम पूछा जाए। भूख महसूस करते हैं, प्यास महसूस करते हैं,[19] स्वतंत्रता के बाद भी कोई फर्क नहीं पड़ा क्या? स्वतंत्र होकर भी भूखे मर रहे हो?

अब तुम स्वतंत्र हो । अब हम गर्व से भूखा मर सकते हैं । कितनी बार समझाया है कि खुशहाल रहा करो । कहो कि सारा देश मालामाल है । सारी समस्या (बेरोजगारी) भी अब नहीं रही ऐसा कहा जाता है ।

सूर्यबाला ने अपनी व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से आज की सबसे बड़ी समस्या बेरोजगारी को अपने व्यंग्य बाणों के जरिए लताड़ा है । कैसे देश के युवाओं को मानसिक औऱ शारीरिक रुप से कमजोर बनाने में यह समस्या अपनी बड़ी भूमिका निभाती है जिससे देश का युवा संतप्त है ।

6.13.4 गरीबी की समस्या :

गरीबी एक मनुष्य, जाति, संप्रदाय के लिए अत्यधिक निर्धन होने की अवस्था है । यह एक ऐसी स्थिति है जब एक व्यक्ति अपनी जीवनोपयोगी सामान्य वस्तुओं जैसे रोटी, कपड़ा, मकान, दवाईयाँ तक प्राप्त नहीं कर पाता या उसकी कीमत चुकाने में भी असमर्थ होता है । गरीबी संसार की सबसे विकट समस्याओं में से एक है । आज के आधुनिक युग में गरीबी जैसी समस्या को दूर करने के लिए विश्वभर में निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं परंतु यह ऐसी समस्या है जो पुरी मानव जाति को प्रभावित करती है । गरीबी एक ऐसी अवस्था है जिसके कारण एक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार जीवनशैली नहीं जी पाता । यह एक अदृश्य समस्या है जो एक व्यक्ति और सामाजिक जीवन को बुरी तरह प्रभावित करती है। इस समस्या के रहते एक व्यक्ति, एक समाज अच्छा जीवन, शारीरिक स्वास्थ्य, शिक्षा आदि प्राप्त करने में भी असमर्थ होता है ।

इसी समस्या का सूर्यबाला ने 'रचनात्मक आयामों से बचते-बचते', 'देश सेवा की तालमेल', 'संदर्भ भारतेन्दु, दीद और बाजी का', 'जन आकांक्षा का टाइटल सॉन्ग' आदि रचनाओं मे उल्लेख किया है ।

6.13.5 स्त्री शोषण की समस्या :

महिला के संदर्भ में समाज में दो प्रकार के दृष्टिकोण नज़र आते हैं । पहला दृष्टिकोण समाज में महिलाओं का सम्मान होता है और दूसरे दृष्टिकोण में

महिलाओं को पुरुषों से निम्न दर्जा दिया जाता है एवं उन्हें पुरुषों की अपेक्षा सभी अधिकारों से वंचित रखा जाता है । महिलाओं का उत्पीड़न कर उनका बलात्कार, यौन शोषण तथा उनके साथ जानवरों से भी बुरा व्यवहार किया जाता है । महिला के निकट के रिश्तेदार जैसे माता-पिता, भाईःबहन, सास-ससुर या परिवार के किसी भी सदस्य या अन्य व्यक्तियों द्वारा या जाने वाला हिंसात्मक व्यवहार जो नारी का शारीरिक व मानसिक शोषण कहलाता है । कभी उत्पीड़न का उद्देश्य धन प्राप्त करना होता है । जैसे दहेज के लिए ससुराल में सदस्यों के द्वारा उसे मारना, ताने देना, दूसरा माध्यम महिलाओं से यौन सुख प्राप्ति के लिए उनका शोषण किया जाता है । तीसरा महिलाओं को कमजोर समझकर उन पर सत्ता स्थापित करना और महिलाओं की तनावपूर्ण पारिवारिक परिस्थितियाँ उत्पन्न करने से है जिससे महिलाओं का मानसिक तौर पर शोषण किया जाता है । हमारा समाज पुरुष प्रधान होना भी महिलाओं पर अन्याय का एक कारण है ।

अनेक कुप्रथाओं के माध्यम से महिलाओं पर अन्याय किया जाता है । जैसे बाल-विवाह, परदा प्रथा, सती प्रथा, विधवा पुनर्विवाह का अभाव आदि भी एक उत्पीड़न के तहत ही आते हैं । भारत में पिछले एक दशक में महिलाओं पर जितने अन्याय अत्याचार हुए उनमें से केवल 12 से 20 प्रतिशत मामलों में ही सुनवाई हुई बाकी मामले कई अदालतों की फाईलों में दबकर रह जाते हैं । इन्हीं सब कारणों को ध्यान में रखकर ही सूर्यबाला के अधिकतर रचित साहित्य के केन्द्र में नारी है । चाहे हम उनके उपन्यासों को पढ़ें या कहानियों का अध्ययन करें, कहीं न कहीं में कभी मुख्य पात्र के रुप में तो कभी गौण पात्र के रुप में नारी का चित्रण मिल ही जाता है । सूर्यबाला के कथा साहित्य में अधिकतर नारी के जीवन और उस पर हो रहे अन्याय, अत्याचार, शोषण, उसकी शारीरिक और मानसिक स्थिति का वर्णन सूर्यबाला ने सुचारु रुप से किया है । और इसी समस्या का उन्होंने अपने व्यंग्य में भी स्थान दिया है और नारी के शोषण पर भी व्यंग्य के बाण चलाये हैं ।

सूर्यबाला की व्यंग्य रचनाएँ 'स्त्री-विमर्श का स्वर्णयुग', 'सवाल जामचक्कों की दुरस्ती का', 'स्त्री उन्मुक्ति के उपलक्ष्य में', 'ससुराल स्त्री विमर्श' आदि रचनाओं में स्त्री, स्त्रियों के प्रति हो रहे शोषण, उत्याचार और उत्पीड़न पर व्यंग्य किया है । 'स्त्री विमर्श का स्वर्णयुग' में स्त्री शोषण को लेकर व्यंग्य किया है । नारी सदियों से उसकी उपेक्षा, दुत्कार और शोषण की वस्तु रही है । स्त्रियों को हमेशा उपभोग की वस्तु समझा गया है । कन्यादान और राखी बाँधने वाली वस्तु रही है । स्त्रियों ने खुद अपनी दुर्दशा सुनी तो दो हत्थड़ मारकर रो पड़ीं । सूर्यबाला अपनी रचना में कहती है- "आप लोगों ने अपनी जंग तो स्त्री को 'वस्तु' समझे जाने के खिलाफ छेड़ी थी न और अब आप जैसी स्त्रियाँ स्वयं वस्तु में तबदील होने की अगुआई कर रही हैं ।"

सूर्यबाला द्वारा रचित 'सवाल जामचक्कों की दुरस्ती का' में सूर्यबाला ने 'हर असफल महिला के पीछे पुरुष का हाथ होता है ।' इस बात का व्यंग्य किया है । लेखिका के अनुसार सिर्फ महिलाओं के प्रति अपने रवैये में सुधार की बात की जाती है परंतु मामला टस का मस वहीं रहता है । जिस प्रकार भारतीय रेलवे खजूर में अटके गाड़ी की तरह स्त्री-पुरुष को गाड़ी के दो पहिए माना है परंतु एक पहिया चालू तो दूसरा पंक्चर है । पिछला बेमरम्मती हाल में है ।

'स्त्री उन्मुक्ति के उपलक्ष्य में' व्यंग्य रचना में स्त्री-उन्मुक्ति के विषय में व्यंग्य किया है । जब से महिला की शादी होती है तब से ही वह अवहेलना, अन्याय और अत्याचार झेलती रहती है । मुकबधिर बनकर यातनाओं को झेलती है यहाँ पर स्त्री । आधुनिकता के नाम पर स्त्रियों को केवल विज्ञापनों में गोरा बनाकर दिखाया जा रहा है । आज समर्थ स्त्री वह है जो बोल्ड होती है । ज्यादा समर्थ हो तो हॉट होती है । यहाँ पर सूर्यबाला ने बताया है कि फिल्मों के माध्यम से भी स्त्रियों को बोल्ड बनाने के बहाने से उनका शारीरिक उत्पीड़न ही हो रहा है।

'ससुराल स्त्री-विमर्श' व्यंग्य रचना में ससुराल में जाने के बाद कैसे लड़की का जीवन परिवर्तित हो जाता है । वो अलग-अलग रिश्तों-नातों में बंध जाती है । जेठानी, देवर, ननदों आदि को वश में करने के लिए अलग-अलग पेटंट आजमाती है । उसका काम सबकी हाँ में हाँ मिलाना होता है । सबकी उम्मीदों पर खरा उतरना होता है । अगर वह ऐसा करने में असमर्थ रहे तो उसे सास-ससुर, पति आदि से ताने सुनने को मिलतै हैं ।

'महिला दिवस और फ्रेंच टोस्ट' व्यंग्य रचना में सूर्यबाला ने महिला दिन के उपलक्ष्य में कैसे उसके सम्मान में शहर, गाँव, देश में कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, दूरदर्शन पर उसकी खूबसूरती पर बहस छिड़ती है इसी बात पर व्यंग्य करती हुई सूर्यबाला लिखती है- "हाय री महिला! तेरी भी क्या तकदीर ठहरी! महिला दिवस कैसे मनाया जाए, यह सोचने का हक तक लपककर एक पुरुष ने हथिया लिया ।" लोग झूठ थोड़े ही कहते हैं कि महिलाएँ अभी बहुत पिछड़ी हुई हैं ।[20]

इस प्रकार सूर्यबाला ने अपनी व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से महिलाओं पर हो रहे अन्याय, उत्पीड़न पर व्यंग्य कसा है जो सीधे पाठकों के हृदय में तीर की भाँति लगता है ।

6.13.6 दंगों की समस्या :

आधुनिक भारत में हिंदु-मुस्लिम रिश्तों में आई कड़वाहट और एक धर्म के अनुयायी दूसरे धर्म के अनुयायियों के जानी दुश्मन बन जाते हैं ऐसी स्थिति में हमारे देश का भविष्य अंधकारमय नज़र आता है । इन धर्मों के नाम पर हो रहे दंगों, हिंसा ने हमारे देश के विकास का बेड़ा गर्क कर दिया है । इन दंगों के पिछे सांप्रदायिक नेताओं, अखबारों का हाथ होता है । इन दिनों भी हमें दंगों के खिलाफ निराशाजनक समाचार सुनने मे आते ही रहते हैं ।

सूर्यबाला ने अपनी व्यंग्य रचनाओं में दंगों की समस्या को भी उठाया है । धर्म के नाम पर कैसे मनुष्य-मनुष्य का जानी दुश्मन बन जाता है । सूर्यबाला की

रचना 'रचनात्मक आयामों से बचते-बचते' में अखबार वाले पूरे के पूरे साहित्य को हाशिये पर डालेंगे इसका जिक्र करती है । इस रचना के माध्यम से सूर्यबाला कहती है कि आये दिन अखबारों की ताजा खबरों में भ्रष्टाचार, यौनाचार, आतंकवाद, दंगे आदि का जिक्र रहता ही है । दंगों की वजह से हर तरफ त्राहि-त्राहि मच जाती है । सारा देश रसातल पर चला जाता है और देश के विकास में ऐसी ही समस्या बाधारुप बनती है ।

'संदर्भ भारतेन्दु, हीडी और बाजी का' में भी सूर्यबाला ने आंदोलनों का जिक्र किया है । देश के राजा के कारण पुरा देश अंधेर नगरी चौपट राजा जैसा हो जाता है । देश अनेक समस्याओं का सामना करता है । यहाँ जाति-धर्म के आधार पर मनुष्य को देखा जाता है । इसी वजह से कभी-कभी सांप्रदायिक दंगे फूट निकलते हैं ।

'जन आकांक्षा का टाइटल सॉन्ग' में देश के कर्णधार देश में बहुत कुछ करने निकलते हैं । वे देश की बाढ़ की समस्या, दंगों, दुर्घटनाओं में मरे खपे लोगों को मुआवजा बाँट चुके हैं । आतंकवाद के खिलाफ देश के नाम संदेश जारी कर चुके हैं । देश की आम जनता को बुलाया जाता है और स्वतंत्रता के बाद भी कैसे यह दंगों की समस्या हो रही है । अब तो भारत में रह रहे सभी धर्म के लोग स्वतंत्र हैं ऐसा समझाया जाता है । अब देश में कोई दंगे नहीं होंगे, कोई भूखा नहीं मरेगा, सब लोग मालामाल होंगे ऐसा सपना दिखाया जाता है ।

इस तरह सूर्यबाला ने अपने व्यंग्य साहित्य के जरिये भारत में हो रहे सांप्रदायिक दंगों पर भी अपने तीखे व्यंग्य के बाण छोड़े हैं ।

6.13.7 विदेश पलायन की समस्या :

भारत में उचित रोजगार प्राप्त ना होने के कारण भारत के उच्च शिक्षित वर्ग से लेकर डॉक्टर, नर्स, प्लंबर, ड्राइवर, इंजीनियर आदि विदेशों की ओर पलायन करते हैं क्योंकि यहाँ भारत में उन्हें योग्य पद, योग्य वेतन नहीं मिल पाता, जिसके कारण देश का नागरिक न केवल आपना बल्कि परिवार का भी पेट नहीं

भर सकता जिसके कारण विदेशों की ओर बढ़ने के लिए देश का युवा प्रेरित होता है जिसे हम अंग्रेजी भाषा में ब्रेन ड्रेन (Brain Drain) के नाम से जानते हैं जो देश के आर्थिक विकास में बाधारुप बनता है । सूर्यबाला की व्यंग्य रचना 'वाया अमेरिका', 'यात्रा अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों की' में इस समस्या पर खुलकर व्यंग्य किया है । कैसे अपनी जीवनशैली को गुणवत्ता युक्त बनाने के लिए भारत की युवा पीढ़ी विदेशों की ओर पलायन कर रही है जो एकदम दिन-ब-दिन विकट समस्या बनती जा रही है।

6.13.8 राष्ट्रभाषा हिंदी की समस्या :

सामान्य एवं व्यवहारिक दृष्टि से समूचे राष्ट्र द्वारा व्यवहार और संविधान द्वारा स्वीकृत भाषा ही राष्ट्रभाषा कहलाती है । एक भारत ही ऐसा देश है, जिसे स्वतंत्र है । जिस देश की अधिकांश जनता लिख-पढ़ या बोल या कम से कम समझ तो सकती ही हो । हमारा देश 15 अगस्त 1947 से पहले स्वतंत्रता पाने के लिए संघर्ष कर रहा था तब यह निश्चय कर लिया गया था कि उपर्युक्त गुणों से संपन्न होने के कारण हिन्दी ही स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा होगी । परंतु अब लोग हिंदी पर ध्यान ही नहीं देते । 'अरे हिंदी-विंदी क्या पढ़ना । उसे पढ-लिख पाना हमारे बस की बात नहीं ।' ऐसा लोगों से सुना जा सकता है । हमारे देश का नागरिक एक प्रांत से दूसरे प्रांत में पहुँचकर विदेश जैसा महसूस करता है ।

सूर्यबाला ने अपने व्यंग्यों में हिंदी संबंधित व्यंग्य रचनाओं का समावेश किया है जिसमें हिंदी विषय की हो रही किरकिरी, समस्या को उजागर किया है । 'यात्रा अंतरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन की' में बताया है कि हिंदी के विकास और प्रगति के लिए विदेशों से उपयुक्त जगह कोई दूसरी हो ही नहीं सकती । ये विदेश हिन्दी लेखकों के लिए काबा-कैलाश है, मक्का-मदीना है, चारों धाम है । पिछले तीन दशकों में हिन्दी नाम खा रही है । सूर्यबाला हिन्दी के संदर्भ में कहती हैं - "अपनी माँ के लिए हिन्दी सम्मेलन तक का टिकट ला दो। सम्मेलन वालों का दिया कुछ कम पड़ रहा हो तो भी हिचकना मत, अपने पास से लगा देना। सुनाहै अन्तर्राष्ट्रीय

हिंदी सम्मेलनों के निमंत्रण इन दिनों ब्लैक में बिक रहे हैं ।"[21] दूसरा व्यंग्य ऐसा है "मैं खोया ही कहाँ था, सिर्फ तुम्हारा आत्मविश्वास खोया था। खैर, हिन्दी की इज्जत रह गई!" [22]

इस तरह सूर्यबाला ने अपनी रचना में राष्ट्रभाषा हिन्दी की समस्या को मद्देनजर रखते हुए व्यंग्यों के तेजतर्रार बाणों को छोड़ा है जो भारत में हिन्दी की दशा और दुर्दशा की सारी हकीकत बयन करते हैं ।

6.13.9 अन्य समस्याएँ:

सूर्यबाला ने अपनी व्यंग्य रचनाओं में अन्य समस्याओं को भी दृष्टिगोचर किया है । जैसे बलात्कार की समस्या, आंदोलनों की समस्या, पुरस्कारों की समस्या, छात्रों की समस्या, हिन्दी के लेखकों की समस्या, भूखमरी की समस्या, बाढ़ की समस्या, सूखे की समस्या आदि का केवल उल्लेख मिलता है । परंतु व्यंग्य में इसका विस्तृत स्वरुप कम देखने को मिलता है ।

6.14 बाल साहित्य में निरुपित समस्याएँ:

बच्चों में जिज्ञासा, अनुकरण और कल्पनाशीलता बड़ों के मुकाबले अधिक होते हैं । वे अनुकरण करके अपने चरित्र का विकास करते हैं । बालमानस को ध्यान में रखते हुए जिस साहित्य की रचना हो चुकी है या रचना अभी जारी है वही बाल साहित्य के अंतर्गत आता है । इस साहित्य में सभी विधाएँ- कहानी, कविता, नाटक, लेख, जीवनी, संस्मरण, पहेली, चुटकुले आदि समाहित होते हैं। अर्थात् जिस साहित्य की रचना की जाती है उस साहित्य में बालमानस को अत्यंत मार्मिक रुप से समझकर, भावनाओं का ध्यान रखकर, बच्चों की कल्पनाशीलता को दृष्टिगत करके साहित्य रचा जाना चाहिए । ऐसा साहित्य बालमानस के लिए स्वस्थ व मनोरंजक होने चाहिए । उसमें ज्ञानार्जन, संवेदनशीलता के भावों का भी होना आवश्यक है जिससे हम भविष्य का एक अच्छा नागरिक बनाने के लिए जो गुण

चाहिए होते हैं, उन गुणों का सिंचन हम बालकों में बाल साहित्य के माध्यम से कर सकते हैं ।

इतना तो हम कह सकते हैं कि ऐसे उद्देश्यपरक साहित्य की रचना करना सरल काम नहीं है । बच्चों के मानस को ध्यान में रखते हुए सरल भाषा, गंभीर विचारों को अभिव्यक्त करना आसान कार्य नहीं है । बाल साहित्य का काम वही साहित्यकार कर सकता है जो अनुभव, ज्ञान की गहनता और लेखन में निपुणता रखता हो । क्योंकि बालमानस को समझना और उस पर साहित्य की रचना करना साधना करने के समान है । साहित्यकार को ऐसा साहित्य निर्माण करने के लिए बालक बनकर अपने बचपन में लौटना पड़ता है । उल्लेखनीय है कि हिंदी बाल साहित्य का निर्माण पर्याप्त मात्रा में हुआ है । हिंदी में बाल साहित्य का विपुल भंडार है । केवल उचित मूल्यांकन करना पड़ता है ।

सूर्यबाला ने भी अपनी लेखनी बालसाहित्य में चलाई है । उनके द्वारा रचित बाल रचना 'झगड़ा निपटाकर दफ्तर' में बच्चों से संबंधित मनोरंजक कहानियों का संग्रह किया है। इसमें कुल तेरह कहानियाँ हैं जिसका प्रकाशन विद्या विहार ने किया है जिसका प्रथम संस्करण 2012 में हुआ था । इसमें समाहित बाल रचनाएँ बच्चों को ध्यान में रखते हुए, उनके बाल मानस को, उनकी कार्यशैली के आधार पर चित्रण किया है जिसमें हमें सरल भाषा, नटखट संवाद, आकर्षित मनोभाव, बच्चों की मानसिकता का, भावनाओं का, मन के विचारों का मुक्त रुप से उनके ही स्तर पर जाकर चित्रण देखने को मिलता है । और रचना करने के साथ-साथ सूर्यबाला ने बालसाहित्य के माध्यम से उनके जीवन में अनेक समस्याओं को उजागर किया है । जिसमें सर्वप्रथम जो समस्या है वह है झगड़े की समस्या ।

6.14.1 बच्चों में झगड़ों की समस्या :

जब खेलने के लिए या अन्य किसी कारण से एक या एक से अधिक बच्चे आपस में खेलते हैं तब अचानक बच्चों में छोटी-छोटी बात पर नोंक-झोंक हो जाती है और आपस में ही झगड़ा करने लग जाते हैं । झगड़ा भी ऐसा होता है जो

थोड़े ही पल में समाप्त भी हो जाता है और फिर से खेलने भी लग जाते हैं । छोटे बच्चे अपने मन में कोई भी भाव स्थायी रुप से नहीं रख सकते। उनका मन अधिक चंचल, चपल होता है । इसलिए अस्थायी रुप से उनमें झगड़े की समस्या खड़ी हो जाती है ।

सूर्यबाला की रचना 'झगड़ा निपटाकर दफ्तर' में बच्चे झगड़ों से परेशान होकर झगड़ों को सुलझाने के लिए एक दफ्तर खोलते हैं और उस दफ्तर में जिन बच्चों के बीच झगड़ा होता है उन बच्चों की सुलह करने में मदद करते हैं । वह इसके लिए कोई फीस भी नहीं लेते । "इस दफ्तर का काम सबके यानी अपने प्यारे दोस्तों के हर किस्म के झगड़ों का निपटारा करना है । किसी भी प्रकार की परेशानी या झगड़ा हो, कुट्टी-मिल्ली की समस्या हो, बोलचाल बंद हो, घूँसापट्टी हो, छीना-झपटी हो, बेखटके हमारे पास आइए। हमारे पास इन सबका शर्तिया इलाज है । बड़े भाई से तकरार हो, छोटी बहन की चीख-पुकार हो, सबसे बचने का सिर्फ एक नायाब नुस्खा । आइए और जल्द कीजिए... झगड़ा कीजिए और फौरन पहुँचिए बाल झगड़ा निपटाकर दफ्तर में।"[23] कहानी में पहला केस विनोद और सरिता का था । दोनों भाई-बहन थे परंतु मम्मी-पापा के पास जाते तो पिटाई हो जाती । इसलिए झगड़ा निपटाकर दफ्तर में अपनी समस्या सुलझाने चले जाते हैं ।

इस रचना में देख सकते हैं कि कैसे छोटी-छोटी बातों पर बच्चों में आपस में लड़ाई हो जाती है और बच्चे आपस में किट्टा-बो करना शुरु कर देते हैं । यह कोई स्थायी समस्या नहीं है । यह अस्थायी समस्या है जिसका समाधान तुरंत भी मिल जाता है या थोड़ी देर भी लग सकती है । परंतु यह समस्या तो हर बच्चों के जीवन में जरुर बनी रहती है जो एक यादगार समस्या के रुप में कभी उन्हें जीवनभर याद रह जाती है ।

बच्चों में एक दूसरे को चिढ़ाने की समस्या :

बच्चों को आपने खेलते हुए कभी देखा हो या उनका पूर्ण निरीक्षण किया हो तो कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं जो अपने सहपाठी, साथ खेलनेवालों, उनके साथ झगड़ा करने वालों को अपने ही अनोखे अंदाज़ में चिढ़ाना प्रारंभ कर देते हैं ।

सूर्यबाला की रचना 'शामू जिंदाबाद' में बच्चों की आपस में एक-दूसरे को चिढ़ाने की बात की गई है । कुछ बच्चे अपने साथी, सहपाठी के रंग, रुप, कार्य को आधार बनाकर खूब मजा लेकर चिढ़ाते हैं । कुछ ऐसे होते हैं जो जैसे को तैसा जवाब देते हैं। परंतु इस कहानी में शामू का व्यवहार सबको पसंद आए ऐसा है । उसका पूरा नाम चिन्मय वर्मा था और शामो शामू, मोटू, फैट भी उसके नाम थे । जब मयंक को किसी ने क्लास में सीकिया कहकर चिढ़ाया था तो उसे बहुत गुस्सा आ गया था। उसने रीटा टीचर से शिकायत भी कर दी थी और उन्होंने माधव को पनिश भी किया था । उस समय तो वह खुश हो गया परंतु उसके इस व्यवहार से क्लास के सभी लड़के उससे दूर-दूर रहने लगे थे । अतुल अस्थाना चिन्मय के कान में बोल रहा था कि बचकर रहना जरा इससे, यह जरा-जरा सी बात पर टीचर से शिकायत लगा देता है । ऐसे चिढ़ने वाले लड़के से भगवान बचाए । उसके बाद मन-मन में उसने 'सॉरी माधव!' और 'शामू ज़िंदाबाद' भी कहा क्योंकि शामू ऐसा लड़का था जिसको चिढ़ाने के बाद भी वह चिढ़ता नहीं था परंतु वह स्वयं ही उसका आनंद लेता था ।

बच्चों में एक-दूसरे क नाम से, शरीर से, आकार से, रंग-रुप से चिढ़ाना सामान्य बात है । बच्चे खेल-खेल में अपने मित्रों, सहपाठियों को चिढ़ाते ही रहते हैं। यह बालमन की सर्वसामान्य समस्या है जिसका उल्लेख सूर्यबाला ने अपनी रचना में किया है ।

6.14.2 बच्चों में गलत अनुकरण करने की समस्या :

बच्चों का हृदय नाजुक एवं कोमल भावनाओं से भरा होता है । उनमें अधिक कल्पनाशीलता होती है और वे अपने आसपास हो रही घटनाओं, प्रसंगों,

बातों का तुरंत ही अनुकरण करना शुरु कर देते हैं । जैसा घर का वातावरण होगा, जैसे उसके घर में माता-पिता और अन्य सदस्यों का व्यवहार और आचरण होगा उसका अनुकरण घर के बच्चे करना शुरु कर देते हैं । इसलिए घर के सदस्यों को हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि अगर वो कुछ भी गलत कार्य, भाषा, आचरण में गलती करते हैं या जो मौलिक गुणों से हटकर बुरा बर्ताव करते हैं तो उसका अनुकरण घर के बच्चे करते रहते हैं । घर के बच्चे बड़ों की आवाज़, भाषा, व्यवहार की नकल आसानी से कर लेते हैं और कभी-कभी यही नकल बच्चों की आदतों को खराब कर देती है जो आगे चलकर उसके क्रमिक, बौद्धिक विकास में बाधारुप बन जाता है । इस बात का हर परिवार को ध्यान रखना चाहिए कि बच्चों के सामने ऐसी किसी भी प्रवृत्ति का आचरण ना करें जो उनके उज्ज्वल भविष्य में बाधा उत्पन्न करे ।

सूर्यबाला ने अपनी बाल साहित्यिक रचनाओं में इस समस्या पर प्रकाश डाला है । इनमें उनकी रचना 'ये जो मेरे पापा हैं न', 'नाक पर गुस्सा', 'लच्छु महाराज की जय' आदि उल्लेखनीय हैं ।

'ये जो मेरे पापा हैं न' इस बालरचना में सूर्यबाला ने बच्चे कैसे खराब चीजों का अनुकरण तुरंत कर देते हैं परंतु अच्छी बातें सीखाने के लिए उनके समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करने पड़ते हैं । उनकी मानसिक अवस्था को समझते हुए उन्हें कैसे इस बात का ज्ञान करवाना है कि वे गलत चीजों का अनुकरण कर रहे हैं । उसके लिए माता-पिता को समझदारीपूर्वक उन्हें समझाने का प्रयत्न करना चाहिए । ये नहीं कि बच्चों पर चिल्लाकर, मारकर, डराकर, धमकाकर उन्हें सही राह दिखाई जा सकती है बल्कि प्यार और समझदारीपूर्वक कहा जाए तो ये बातें बच्चे बड़ी आसानी से समझ भी जाते हैं । इस कहानी में बच्चों की अपशब्द बोलने की समस्या देखकर पापा ने सबक सिखाने के लिए डाँट-फटकार न लगाकर लड़के से कहा 'वो सड़क वाले मैदान में कितने बच्चे खेलते हैं, उनके साथ खेलने जाया करो । घर मे क्या करते हो?' तब लड़का बोला- 'उन गंदे गँवार

बच्चों के साथ मुझे भेज रहे हैं पापा? उनके साथ मैं कैसे खेलूँगा? आप और मम्मी तो हमेशा मना करते हैं कि वे बच्चे खेल-खेल में घुँसापट्टी, मारपीट कर बैठते हैं । बात-बात में गालियाँ देते हैं ।' इसका अर्थ यह होता है कि गलत संगत में रहकर बच्चे उनके साथ रहने वालों के व्यवहार, भाषा का अनुकरण कर लेते हैं और कहीं-न-कहीं वे धीरे-धीरे अपने आचरण में भी प्रवाहित होता है जो बच्चों के व्यक्तित्व के विकास के लिए अच्छा नहीं है ।

'नाक पर गुस्सा' बाल रचना में सूर्यबाला ने बच्चों की सहज मानसिकता को प्रकट किया है । मनोवैज्ञानिक तरीके से देखा जाए तो यह एक सरल और स्वाभाविक बात हमें अपने बच्चों में देखने को मिलती है । बच्चे किसी भी बात का अनुकरण जल्द ही कर लेते हैं। वह सर्वप्रथम अपने मा-बाप का ही अनुकरण करते हैं । वह उनके अनुकरण करके उनके जैसा ही बनना चाहते हैं । उनसे ही देखकर सीखते हैं . इस कहानी में भी सूर्यबाला जी ने चिन्नु और उसकी माँ के बीच हुए संवादों के माध्यम से समझाया है । इसलिए माता-पिता को अपने बच्चों के सामने बुरा आचरण, व्यवहार करने से बचना चाहिए । घर में गुस्से से बोलना, चिल्लाकर बोलना, अपशब्दों का उपयोग करना, डराना आदि नहीं करना चाहिए क्योंकि इसका उनके मानस पर गलत प्रभाव पड़ता है और धीरे-धीरे वे इन्हीं बुरी आदतों का अनुकरण कर लेते हैं ।

दूसरा, 'लच्छु महाराज की जय' में भी लेखिका इसी बात का जिक्र करती है । टिन्नू अपने मित्र के घर जाता है । उसके देखा-देखी वह घर आकर एक गरीब लड़का लक्ष्मण, जो उनके घर रहता है, उससे दुर्व्यवहार करता है । यह सब असर उस पर उसके मित्र बंटी के घर जाने पर उसके व्यवहार का प्रभाव उस पर पड़ा है । उसके मित्र की शानोशौकत देखकर वह भी उसका अनुकरण करने लगता है । इस बात से हम यह समझ सकते हैं कि बच्चों के सामने किया गया व्यवहार, उनकी संगति का वह बड़ी आसानी से अनुकरण कर लेते हैं । इसिलए माता-पिता को हमेशा अपने बच्चों की संगति और मित्रों पर ध्यान देना चाहिए ।

कहीं गलत मित्रों के साथ रहकर कुछ गलत तो नहीं सीख रहा, अगर इस समस्या पर ज्यादा ध्यान न दिया जाए तो बच्चे के बड़े होते-होते यह समस्या भी उसके भीतर विकास करती जाती है । इसलिए बच्चों के सामने अपने व्यवहार, वाणी, भाषा पर ध्यान देना चाहिए ।

6.14.3 लड़का-लड़की में भेदभाव की समस्या :

हमारी भारतीय संस्कृति में शुरुआत से ही यह भेदभाव देखा जाता है कि अधिकतर परिवारों में लड़का-लड़कियों में भेदभाव किया जाता है । यह भेदभाव आज के आधुनिक युग में भी बरकरार है । कितने परिवारों में बेटा जन्म लेता है तो खुशियाँ मनाई जाती हैं परंतु वहीं बेटी पैदा हो गई तो लोग मुँह बना लेते हैं । हमारे समाज में आज भी माँ-बाप लड़की को बोझ समझते हैं । परिवार में भी उसे उसके भाई की अपेक्षा कम महत्त्व दिया जाता है । पढ़ाई में भी देखेंगे तो लड़की को सरकारी पाठशाला में पढ़ाया जायेगा और लड़के को प्राइवेट स्कूल में भेजा जाता है । खाने-पीने के मामले में भी यह भेदभाव आपको दिख ही जाएघा । घर के कामकाज में तो यह भेदभाव आम है । घर के सारे काम खाना पकाने से लेकर, झाड़ू मारना, बरतन साफ करना, पोंछा मारना और दूसरे अन्य काम लड़कियों से करवाये जाते हैं परंतु लड़का होने के कारण उसे कुछ भी घर का काम बताया नहीं जाता । यह अंतर हम हर समाज में देखते हैं ।

बाल रचना 'झगड़ा निपटाकर दफ्तर' में हम बच्चों को आपस में संवाद करते जब पढ़ते हैं तो यह समस्या हमें दृष्टिगत होती है । जैसे कुछ संवाद यहाँ प्रस्तुत हैं-

"लड़कियाँ बहुत चॉय-चॉय करती हैं । मेरे पापा कहते हैं कि ये किसी का भी दिमाग खाली कर सकती हैं ।"[24]

"लड़का-लड़की में जब झगड़ा होता है तब लड़कियाँ ही इस तरह हूँ-हूँ करके रोती हैं जरा-जरा सी बात पर ।"[25]

"मैं पहले ही कहता था, लड़कियों को मत लाओ। अब लो मजा ।"

"देखो, हम लोग लड़कियों से मारपीट नहीं करते लेकिन तुम लोगों के इस तरह लड़ने-भिड़ने और रोने से हमारे दफ्तर की बदनामी होगी ।"[26]

इस तरह इस कहानी के संवादों से ही ध्यान में आ जाता है कि लड़का-लड़की को समान हक प्राप्त नहीं होते । लड़कियों को हमेशा अपने हक के लिए लड़ना पडता है । अगर वही नहीं लड़ती तो उन्हें डरपोक और दब्बू समझा जाता है ।

इस तरह सूर्यबाला ने इस भेदभाव को बाल-संवादों से भी जाहिर कर दिया है ।

बच्चों को मारने-पिटने की समस्या : हम अकसर कितने परिवारों में देखते हैं कि कुछ माता-पिता और घर के अन्य सदस्य अपना गुस्सा घर के मासूम बच्चों को शिकार बनाकर उन्हें मार-पिटकर उतारते हैं । कभी-कभी बच्चे खुद अपनी शरारतों के कारण भी इसका शिकार बनते हैं, तो कभी कुछ बच्चे अपने माता-पिता की उम्मीदों पर खरे नहीं उतरते तब भी उन्हें डराया-धमकाया जाता है, मारा-पिटा जाता है, उनके साथ दुर्व्यवहार किया जाता है जिसके कारण उनके मानस पटल में एक डर घर कर जाता है । ऐसे बच्चों का आत्मविश्वास टूट जाता है और अंदर ही अंदर वे घूटते रहते हैं । कभी-कभी बहुत बड़ी बात हो जाने पर भी वे वह बात अपने माता-पिता को बता नहीं पाते और गलत राह पर जाते हैं ।

आज के वर्तमान समय में भी हम देखते हैं कि पढ़ाई-लिखाई का बोझ और माता-पिता का डर इतना बच्चों के दिमाग में घर कतर जाता है कि परीक्षा का परिणाम आते ही ऐसे बच्चे आत्महत्या तक कर लेते हैं । ऐसे में माँ-बाप को अपने बच्चों को डराने-धमकाने, मारने-पिटने से बचना चाहिए क्योंकि यह एक ऐसी समस्या है जो बच्चे की शारीरिक, मानसिक स्थिति को खराब कर देती है और वह एक सशक्त नागरिक बनने से कहीं पीछे छूट जाता है । उसके व्यक्तित्व का उचित विकास नहीं हो पाता ।

अपनी बाल रचना 'झगड़ा निपटाकर दफ्तर' में सूर्यबाला बाल-संवादों के आधार पर इस समस्या को हमारे सामने प्रस्तुत करती है ।

"ये मम्मी-पापा? इनका जितना अन्यायी कोई नहीं ।"27

"मेरी तो और मुसीबत, मेरे पापा जब छोटे चाचा को डाँटते हैं तो पापा के चले जाने पर वे अपना सारा गुस्सा मुझ पर रुआब मारके उतारते हैं ।"28

"छोटो, अब इन लोगों की तानाशाही नहीं चलेगी।" और एक जोरदार नारा लगाया बच्चों ने- "मम्मी-पापा क तानाशाही.. नहीं चेलगी- नहीं चलेगी ।"

इस कहानी के माध्यम से सूर्यबाला समझाना चाहती है कि बच्चों को मारने-पिटने से समस्या का हल नहीं निकलता क्योंकि इसका परिणाम अच्छा नहीं आता है । बच्चों की शरारतों, आदतों को मा-बाप ही सुधार सकते हैं । उन्हें बच्चों को समझाना चाहिए कि अच्छी बातों और बुरी बातों में क्या अंतर होता है और उन्हें उदाहरणों, कहानियों और प्यार से भी बातों को समझाया जा सकता है। जितना हो सके उतना बच्चों को शारीरिक रुप से प्रताड़ित नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसे बच्चे मानसिक, शारीरिक रुप से दब्बू बन जाते हैं और अपने आप को समाज में प्रस्तुत करने से बचते हैं ।

यह समस्या बहुत ही विकट समस्या है क्योंकि इस समस्या के कारण कई बच्चों की मानसिक स्थिति पर गलत प्रभाव पड़ता है । हमेशा इस बात का ध्यान रखें कि बच्चों को मारने-पिटने से ज्यादा उन्हें समझाने का प्रयास करें, प्यार से, दुलार से ।

6.14.4 बच्चों में लालच की समस्या :

आज का समय ऐसा है जो तेजी से परिवर्तित हो रहा है । बच्चे क्या, बड़े क्या, सभी लोगों में सब कुछ तुरंत पाने की होड़ लगी रहती है किसी के जीवन में एक ठहराव कम ही देखने को मिलता है । बच्चे तो कच्ची मिट्टी की भाँति होते हैं। उन्हें सही समय पर सही बातें ना सिखाई जायें तो बड़े होने के बाद हम उन्हें कुछ

भी नहीं सिखा सकते । बच्चे अपने दोस्तों, मित्रों, सहपाठियों के पास कोई नई चीज़, खिलौने, पुस्तकें, विडीयो गेम या खाने की सामग्री देखते ही उसे पाने के लिए उनमें लालच जन्म ले लेता है । उसके लिए वे अपने मा-बाप को रो-धोकर, चिख-चिल्लाकर अपनी बात मनवाकर ले ही लेते हैं। और कुछ माता-पिता भी अपने बच्चों की हर जिद, हर लालच को तुरंत पूरा भी कर देते हैं । आजकल बच्चों से प्यार जताने का, उनसे अपना काम निकलवाने का एकमात्र यही तरीका है कि बच्चों को लालच दिया जाए । कभी चॉकलेट, कभी खिलौने, कभी कुछ नया खाने का, विडीयो गेम का, कहीं बाहर घुमाने ले जाने का आदि लालच देकर उनको शांत किया जाता है या अपना काम निकलवाया जाता है ।

काम करने वाले पति-पत्नी समय के अभाव में बच्चों की जिद पूरी कर बच्चों के मन में लालच का बीज बो देते हैं । बच्चों में लालच की प्रवृत्ति को दूर करने के लिए उन्हें उचित संस्कार देने की आवश्यकता है । इसके लिए बच्चों को बचपन से ही सही-गलत, अच्छे-बुरे के बीच क्या भेद होता है यह सिखाया जाना चाहिए । अगर कोई चीज मा-बाप की हेसियत से बाहर हो तो प्यार से बच्चे को इसके लिए मना कर दें । अपने सामर्थ्यानुसार ही उनकी जरुरतों को पूरा करें । उन्हें यह भी सिखाना होगा कि अपने से बेहतर किसी की भी चीज को देखकर लालच करना बुरी बात है । लालच देने से बच्चे बार-बार अपनी बात मनवाने के आदि हो जाते हैं और समय के साथ यह लालच जिद में परिवर्तित हो जाती है और समय के साथ यह लालच जिद में परिवर्तित हो जाती है और जिद भी बड़ा स्वरुप धारण कर लेती है । बच्चों को लालच देकर काम करवाना सही नहीं है ।

इसी समस्या को सूर्यबाला ने अपनी बाल रचनाओं के माध्यम से सामने रखा है । 'झगड़ा निपटाकर दफ्तर','मेरा फ्लॉप शो', 'होली पर एक प्रतियोगिता:मम्मियों की' आदि । 'झगड़ा निपटाकर दफ्तर' में बच्चों में लालच की समस्या देखी जा सकती है । यह समस्या कुछ संवादों के आधार पर सूर्यबाला ने उजागर की है ।

"वाह! मैं लालची क्यों बनूँ? मेरी मम्मी ने मुझे बचपन से सिखाया है - जब भी कोई तुम्हें खाने की चीज के लिए पूछे तो पहले मत लो, कहो कि नहीं, मैं तो घर से खाकर आई हूँ।"[29]

"देखना, अब लालचपन नहीं दिखाऊँगा, पर देखना बबली कुछ लाएगी जरुर । अच्छी लड़की है बबली ।"[30]

दूसरी कहानी 'मेरा फ्लॉप शो' में देखा जा सकता है कि यह माता-पिता के हाथ में होता है कि बच्चे की हर जिद को पूरा ना करें क्योंकि वह एक तरह की चीज-वस्तु का लालच ही उन्हें जिद करने के लिए मजबूर करता है । बल्कि माता-पिता को अपने बच्चों को समझाना चाहिए कि हर चीज में जिद करना या लालच करना अच्छी बात नहीं । लड़का यहाँ अपने मा-बाप से कहता है कि "आप और पापा अच्छी-अच्छी विदेशी चीजें घर क्यों नहीं लाते? आप लोगों की इस लापरवाही और कंजूसी की वजह से आज मेरे दोस्तों में मारी नाक कट गई ।"[31]

'होली पर एक प्रतियोगिता : मम्मियों की' इस कहानी में एक प्रतियोगिता होली के दिन रखी जाती है कि कौन-सी मम्मी सारे मुहल्ले के हम सब बच्चों को प्यार करती है यानी अच्छी-अच्छी चीजें खिलाती है । इसके लिए गुप्त रुप से मम्मियों के व्यवहार पर बच्चों के द्वारा नजर रखी जा सके परंतु सबी मम्मियों को इस बात की भनक लग जाती है कि बच्चों ने होली के दिन फेवरेट मम्मी की प्रतियोगिता का आयोजन किया है तो सारी मम्मियाँ अपने-अपने तरीके से सभी बच्चों को प्रथम पुरस्कार पाने के चक्कर में खाने-पीने का लालच देने लग गई थी जिससे उनको अच्छे नंबर मिले । परंतु आखिर में बच्चों ने इसको ध्यान में नहीं रखा कि किसकी मम्मीने क्या लालच दिया था और क्या खिलाया-पिलाया था । बल्कि सभी मम्मियों को उन्हेंने श्रेष्ठ करार दिया और सबको दो-दो टॉफियाँ दी और उनका सम्मान किया।

इस तरह सूर्यबाला ने अपनी बाल कहानियों में लालच की समस्या को बच्चों के ही संवादों, भाषा, मनोभावों के रुप में व्यक्त किया है और बच्चों को

कहानी के माध्यम से ही लालच न करने की और लालच बुरी बला है इस सलाह और सीख को सहज और सरल भाषा में प्रस्तुत किया है ।

6.14.5 बच्चों में चुगलखोरी की समस्या :

कभी-कभी माता-पिता ही जाने-अनजाने में अपने बच्चों में चुगली करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं । जैसे यहाँ की बात वहाँ करना, किसी के संदर्भ में बुराई करना, किसी व्यक्ति की या मित्र की पीठ पीछे चुगली करना- यह आदत हमें बच्चों में अकसर देखने को मिलती है ।

मनोवैज्ञानिक रुप में अगर हम देखें तो चुगली करना अर्थात् किसी के खिलाफ चुगली करके अपने मन की भड़ास निकालना होता है । जो भड़ास निकालने का एक माध्यम है । खुद की खुशी के लिए दूसरों में कमियाँ ढूँढकर मनमाने रुप से किसी के विषय में चुगली करना यह एक आदत भी बन जाती है कभी-कभी । अकसर हम देखते हैं कि बच्चे जब कोई गलती करते हैं या माता-पिता द्वारा पकड़े जाते हैं तो तत्काल अपने आपको बचाने के लिए अन्य की चुगली कर देते हैं ।

वास्तव में देखें तो चुगलखोरी करना एक बिमारी भी बन सकती है जो स्वयं को आनंद प्राप्त करने के लिए की जाने वाली प्रवृत्ति है । छोटे बच्चों से लेकर बड़े-बड़े तक इसका मजा लेते हैं। सूर्यबाला ने अपने बालसाहित्य में एक कहानी में महत्वपूर्ण रुप से इस समस्या पर आघात किया है । नाम है 'हाय-हाय वे चुगलखोरियाँ मेरी' । इसमें सूर्यबाला ने बच्चों को चुगली न करने की सीख दी है क्योंकि छोटे बच्चों की यह आदत होती है कि वे हर बात अपने माता-पिता को बताते हैं और फिर वो हर बात न जाने कब चुगलखोरी में परिवर्तित हो जाती है उन्हें पता बी नहीं चलता । शुरुआत में तो उन्हें इसका आनंद आता है परंतु बाद में इसका परिणाम अच्छा नहीं आता । बच्चों की आदत माँ-बाप ही सुधार सकते हैं । उन्हें बच्चों को समझाना चाहिए कि अच्छी बातों और बुरी बातों में क्या

भिन्नता है । हो सके तो उन्हें चुगली का अर्थ विस्तार से समझाएँ । उदाहरणों से, कहानी से, चित्रों के आधार पर आप इस समस्या के बारे में बच्चों को समझा सकते हैं क्योंकि यही समस्या आगे जाकर उसके व्यक्तित्व पर बड़ा बुरा असर कर सकती है । क्योंकि इसके कारण समाज, परिवार में चुगली करने वाले की साख बुरी पड़ती है । कोई भी चुगलखोर बच्चों के सामने किसी महत्त्वपूर्ण तों की चर्चा व जिक्र करने से बचते हैं । सूर्यबाला ने चुगलखोरी के कई उदाहरण यहाँ प्रस्तुत किये हैं जिसमें दादा-दादी वाला, बड़े भाई बहनों वाला, छोटे चाचा वाला उदाहरण प्रस्तुत किया है । परंतु एक ऐसा भी उदाहरण प्रस्तुत किया है जिससे इस आदत से उन्होंने तौबा कर ली जो सबक उनके उनके छोटे चाचा ने थर्मामिटर के माध्यम से समझाया । जिस चुगले से कभी शाबाशी मिलती थी उसी चुगली से लड़की को तमाचा भी मिला ।

चुगली करना यह एक आम समस्या है बच्चों में, परंतु कभी-कबी यह समस्या आदत बन जाने पर बच्चों के भविष्य को तहस नहस भी कर सकती है और इस समस्या के कारण कभी-कभी उन्हें मार भी पड़ सकती है और उनकी स्वयं की छवि भी इस कारण से समाज, परिवार में खराब हो सकती है । जहाँ तक हो सके वहाँ तक बच्चों को चुगलखोरी न करने की सलाह अपने मा-बाप से ही मिलनी चाहिए क्योंकि अपने बच्चों में संस्कारों के बीज तो मा-बाप को ही बोने होते हैं । उनका सिंचन भी उन्हें ही करना होता है ।

* * * * *

षष्ठम अध्याय

संदर्भ सूची

1. एम. गिन्सबर्ग, सोशॉलॉजी, पृ. 40
2. विश्वेश्वरैया (अनु.) समाज, पृ. 26
3. "ऑगबर्न तथा एम.एफ. निमकॉक - A Handbook of Sociology, Page 182
4. R.M. MacIver and C.H. Page, Society : An Introductory Analysis, Page 238
5. E.W. Burges and H.J. Lock, The Family, Page 8
6. अग्निपंखी, पृ. 89
7. अग्निपंखी, पृ. 110
8. थाली भर चाँद, पृ. 152
9. सांझवाती, पृ. 156
10. एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृ. 43
11. पाँच लंबी कहानियाँ, पृ. 15
12. पाँच लंबी कहानियाँ, पृ. 19
13. सूर्यबाला की लोकप्रिय कहानीयाँ, पृ. 127
14. कात्यायनी संवाद, पृ. 40
15. कात्यायनी संवाद, पृ. 40
16. कात्यायनी संवाद, पृ. 40
17. कात्यायनी संवाद, पृ. 40
18. थाली भर चाँद, पृ. 30
19. भगवानने कहा था, पृ. 26
20. धृतराष्ट्र टाइम्स, पृ. 111
21. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 2

22. मेरी प्रिय व्यंग्य रचनाएँ, पृ. 5
23. झगड़ा निपटाकर दफ्तर, पृ. 10
24. झगड़ा निपटाकर दफ्तर, पृ. 13
25. झगड़ा निपटाकर दफ्तर, पृ. 24
26. झगड़ा निपटाकर दफ्तर, पृ. 35
27. झगड़ा निपटाकर दफ्तर, पृ. 11
28. झगड़ा निपटाकर दफ्तर, पृ. 11
29. झगड़ा निपटाकर दफ्तर, पृ. 14
30. झगड़ा निपटाकर दफ्तर, पृ. 15
31. झगड़ा निपटाकर दफ्तर, पृ. 55